हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 5, अंकः 319, पृष्ठ 4, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 27 अप्रैल, 2021 दिन मंगलवार गाजीपुर/वाराणसी

24 घंटे में कोरोना के 3,52, 991 नये मरीज, 2812 लोगों की मौत

नई दिल्ली। दिल्ली में लगातार कोरोना वायरस का कहर जारी है। भारत की राजधानी दिल्ली के लोग एक-एक सांस के लिए तरस रहे है। कोरोना वायरस से संक्रमितों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। हर दिन ये संख्या अपना पुराना रिकॉर्ड तोड़कर नया रिकॉर्ड बना लेती है। 24 घंटे में 2800 से ज्यादा लोगों ने कोरोना वायरस से अपनी जान गंवा दी। देश भर में एक दिन में कोरोना के 3,52, 991 नये मरीज सामने आये हैं और 2812 लोगों की मौत हुई हैं। देशभर में अब तक 2,19, 272 लोग कोरोना से ठीक भी हुई हैं।

कुल मामले- एक करोड़ 73 लाख 13 हजार 163

कुल मौत- एक लाख 95 हजार 123

कुल डिस्चार्ज- एक करोड़ 43 लाख 4 हजार 382

कुल टीकाकरण- 14 करोड़ 19 लाख 11 हजार 223

देश में पिछले 24 घंटे में कोविड-19 के 3,52,991 नए मामले आने के बाद संक्रमितों की कुलसंख्या बढ़कर 1,73,13,163 हुई जबकि वर्तमान में उपचाराधीन मरीजों की संख्या 28 लाख को पार कर गयी है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस बारे में बताया। मंत्रालय द्वारा सोमवार सुबह आठ बजे तक अद्यतन की गयी जानकारी के अनुसार, संक्रमण से 2,812 लोगों की मौत होने से मरने वालों की संख्या बढ़कर 1,95,123 हो गयी है। संक्रमण के मामलों में तेज वृद्धि के साथ उपचाराधीन मरीजों की संख्या बढ़कर 28,13,658 हो गयी है जो कुल संक्रमितों का 16.25 प्रतिशत है जबकि राष्ट्रीय स्तर पर कोविड-19 से स्वस्थ होने की दर गिरकर 82.62 प्रतिशत हो गयी है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि संक्रमण से ठीक होने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 1,43,04,382 हो गयी है। मृत्यु दर गिरकर 1.13 हो गयी है। भारत में कोविड-19 के मामले सात अगस्त को 20 लाख का आंकड़ा पार कर गए थे। इसके बाद संक्रमण के मामले 23 अगस्त को 30 लाख, पांच सितंबर को 40 लाख और 16 सितंबर को 50 लाख के पार चले गए थे। वैश्विक महामारी के मामले 28 सितंबर को 60 लाख, 11 अक्टूबर को 70 लाख, 29 अक्टूबर को 80 लाख, 20 नवंबर को 90 लाख और 19 दिसंबर को एक करोड़ का आंकड़ा पार कर गए थे। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के मुताबिक 25 अप्रैल तक 27,93,21,177 नमूनों की जांच की जा चुकी है जिनमें से 14,02,367 नमूनों की जांच रविवार को की गयी।

चार और ऑक्सीजन टैंकर पहुंचे लखनऊ, 1.20 लाख मरीजों को मिलेगी राहत

लखनऊ। बोकारो ऑक्सीजन प्लांट से ऑक्सीजन एक्सप्रेस की दूसरी रेक सोमवार सुबह 6:40 बजे लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेशन पहुंची। इस रैक में चार लिक्विड ऑक्सीजन टैंकर आए हैं। हर टैंकर में 15 हजार लीटर ऑक्सीजन है। बताया जा रहा है कि एक टैंकर ऑक्सीजन से 30 हजार मरीजों को ऑक्सीजन मिल सकता है। जिसे यूपी के चार जनपदों में भेजा गया। इनमें सबसे पहला रैक बरेली के लिए 7:45 बजे रवाना हुई। वहीं दूसरी रैक झांसी, तीसरा रैक लखनऊ के सरोजनीनगर प्लांट भेजा गया। वहीं अंतिम चौथा टैंकर बाराबंकी भेजा गया। बोकारो से ऑक्सीजन एक्सप्रेस 16 घंटे में लखनऊ पहुंची। इस ऑक्सीजन एक्सप्रेस को वाराणसी से लोको पायलट संजय राम लेकर लखनऊ पहुंचे। जिसे यार्ड से प्लेटफार्म पायलट संजीव कुमार व अवनीश कुमार लेकर पहुंचे। लखनऊ चारबाग रेलवे स्टेशन पर रैक पहुंचने के बाद सभी टैंकरों में जीपीएस यानी ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम लगाया गया।

कोरोना पीड़ितों के लिए सरकार के प्रयास जमीनी हकीकत में भी लागू हों : मायावती

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने कोरोना पीड़ितों के लिए केंद्र और राज्य की भारतीय जनता पार्टी की सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों को जमीनी हकीकत में भी समय से लागू करने की सोमवार को मांग की। बसपा प्रमुख ने सोमवार को एक ट्वीट के जरिये देश भर के बसपा कार्यकर्ताओं से अपने सामर्थ्य के अनुसार कोरोना पीड़ितों की मदद का आह्वान किया। मायावती ट्वीट किया, केन्द्र व उत्तर प्रदेश सरकार ने कोरोना पीड़ितों के इलाज के लिए तथा ऑक्सीजन व दवा आदि की कमी को दूर करने के लिए जो भी जरूरी कदम उठाये हैं, वह अच्छी बात है, लेकिन ये सब जमीनी हकीकत में भी समय से लागू होने चाहिये। बसपा की यही मांग है। सिलसिलेवार ट्वीट में पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, पूरे देश में बसपा के लोगों से भी अपील है कि वे अपने आस-पड़ोस में कोविड पीड़ितों की अपने सामर्थ्य के हिसाब से उनकी हर स्तर पर इंसानियत के नाते मदद जरूर करें, लेकिन इस दौरान वे कोरोना नियमों का भी सख्ती से पालन करें।

चुनाव आयोग पर चले हत्या का केस, उसके चलते ही हुआ कोरोना का विस्फोट : हाईकोर्ट

चेन्नै। मद्रास हाई कोर्ट ने बीते कुछ सप्ताह में कोरोना के केसों में तेजी से इजाफे के लिए चुनाव आयोग को जिम्मेदार ठहराया है। यही नहीं अदालत ने कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा है कि गैरजिम्मेदाराना व्यवहार के लिए चुनाव आयोग के खिलाफ हत्या का केस दर्ज किया जाना चाहिए। कोर्ट ने कहा कि चुनाव आयोग अपनी जिम्मेदारी को अदा करने में विफल रहा है। बेंच ने कहा कि चुनाव में राजनीतिक दलों ने कोरोना प्रोटोकॉल का जमकर उल्लंघन किया है और आयोग उन्हें रोकने में नाकाम रहा है। अदालत ने कहा कि आयोग के चलते स्थिति इतनी विकराल हुई है और वह राजनीतिक दलों पर नकेल कसने में नाकाम रहा है।

चीफ जस्टिस संजीब बनर्जी और जस्टिस सेंथिल कुमार राममूर्ति की बेंच ने कहा, 'संस्थान के तौर पर चुनाव आयोग ही इस आज के हालात के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है। आपने अपने अधिकार का कोई इस्तेमाल नहीं किया। अदालत की ओर से कई आदेश दिए जाने के बाद भी आपकी ओर से राजनीतिक दलों के खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया गया।

कोविड प्रोटकॉल बनाए रखने की तमाम अपीलों और आदेशों को नजरअंदाज किया गया है।' यही नहीं अदालत ने कहा कि यदि आपने कोविड प्रोटोकॉल का कोई ब्लूप्रिंट नहीं तैयार किया तो हम 2 मई को होने वाली मतगणना को रुकवा भी सकते हैं। अदालत ने कहा कि आपकी मूर्खता के चलते ही ऐसे हालात पैदा हुए हैं।

अदालत ने कहा, 'अब हम आपको यह बता रहे हैं कि यदि 2 मई से पहले आपने कोविड प्रोटोकॉल के पालन को लेकर कोई ब्लूप्रिंट नहीं दिया तो फिर हम मतगणना रुकवा भी सकते हैं। हम नहीं चाहते कि आपकी मूर्खता के चलते राज्य में कोई और मौत हो।' कोर्ट ने कहा कि किसी भी कीमत में कोरोना प्रोटोकॉल के उल्लंघन के बीच भी मतगणना जारी नहीं रह सकती। अदालत ने कहा कि जनता का स्वास्थ्य हमारे लिए सबसे अहम है और इससे किसी भी तरह का समझौता नहीं किया जा सकता। अदालत ने कहा कि संवैधानिक संस्थाओं को जिम्मेदारी के साथ बर्ताव करना चाहिए।

दिल्ली में भी 18 साल से ज्यादा उम्र वालों को लगेगी फ्री कोरोना वैक्सीन : केजरीवाल

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में कोरोना वायरस के कहर ने हाहाकार मचा रखा है। रोजाना यहां 20 हजार से अधिक लोग संक्रमित हो रहे हैं तो वहीं, 300 से ज्यादा लोग प्रतिदिन दम तोड़ रहे हैं। कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए केजरीवाल सरकार ने 18 साल से ज्यादा उम्र वाले लोगों को फ्री में वैक्सीन लगाने का फैसला किया है। सीएम अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को यह ऐलान किया। बता दें कि देशभर में 1 मई से 18 साल से ऊपर वालों को कोरोना वैक्सीन लगाई जाएगी। सोमवार को प्रेस कांफ्रेंस में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि देशभर में कोरोना का जबरदस्त कहर छाया हुआ है। कोरोना काल में समाधान एक ही है और वो है वैक्सीन। दिल्ली सरकार ने फैसला लिया है कि 18 साल से ऊपर उम्र को फ्री वैक्सीन दी जाएगी। इसका पूरा प्लान तैयार हो रहा है। अरविंद केजरीवाल ने आगे कहा कि हमने देखा है कि इस महामारी से 18 साल से कम उम्र के जवान और बच्चे भी बहुत संक्रमित हो रहे हैं। अब उनके लिए भी सोचने का समय आ गया है कि ये वैक्सीन उनको भी लगाई जा सकती हैं और अगर नहीं लगाई जा सकती तो मैं उम्मीद करता हूं कि जल्द दूसरी वैक्सीन भी इजाद होंगी। सीएम ने बताया कि आज 1.35 करोड़ वैक्सीन खरीदने की मंजूरी दी गई है। वह बोले कि वैक्सीन के एक निमार्ता ने कहा है कि वो राज्य सरकारों को 400 और दूसरे ने कहा कि वो 600 रुपये में वैक्सीन देंगे और केंद्र सरकार को 150-150 रुपये में देंगे। इसकी एक ही कीमत होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि वैक्सीन के दाम अलग अलग आ रहे हैं, जो ठीक नहीं है। वैक्सीन बनाने वाली कंपनियों से निवेदन है कि वह इसे 150 रुपये तक ले आएं। केंद्र सरकार से भी निवेदन है कि दाम पर कैपिंग की जाए। आपको बता दें कि दिल्ली से पहले महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, राजस्थान और ओडिशा की राज्य सरकारों ने अपने प्रदेश में 1 मई से 18 साल से ऊपर वालों को फ्री वैक्सीन लगाने की घोषणा कर चुकी हैं।

ममता के कुशासन के कारण मालदा बम बनाने की फैक्ट्री के रूप में जाना जाने लगा: जेपी नड्डा

कोलकाता। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने आज पश्चिम बंगाल के मालदा में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए एक चुनावी जनसभा को संबोधित किया। अपने संबोधन के दौरान जेपी नड्डा ने ममता बनर्जी और उनकी सरकार पर जमकर निशाना साधा। एक न्यूज एजेंसी के मुताबिक जेपी नड्डा ने कहा कि हम सब लोग बचपन से मालदा को आम की दृष्टि से जानते थे। ममता जी के कुशासन के कारण मालदा बम बनाने की फैक्ट्री के रूप में जाना जाने लगा, नकली नोट छापने की दृष्टि से जाना जाने लगा। जेपी नड्डा ने आगे कहा कि बंगाल में चापलूसी की राजनीति और कटमनी की राजनीति कैसे चल रही है, यह हम सभी जानते हैं। हमें इस संस्कृति को नष्ट करना है और बंगाल में विकास की संस्कृति का निर्माण करना है।

आपको बता दें कि पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के लिए आज सातवें दौर का मतदान जारी है। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 8वें दौर के मतदान के बाद समाप्त हो जाएगा। 2 मई को इसके नतीजे आएंगे।

उत्तराखंड के चमोली में आये हिमस्खलन में अब तक 13 लोगों की मौत, बचाव कार्य जारी

गोपेश्वर (उत्तराखंड)। उत्तराखंड के चमोली जिले में भारत-चीन सीमा के निकट नीति घाटी के सुमना में सोमवार को एक और शव बरामद होने से हिमस्खलन में मरने वालों की संख्या 13 हो गई। चमोली के जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी एनके जोशी ने बताया कि सुमना में हादसे वाली जगह से सुबह एक और शव बरामद किया गया। शुक्रवार को हुए हिमस्खलन वाले स्थान से शनिवार को 10 और रविवार को दो शव बरामद किए गए थे। इसके साथ ही हादसे में अब तक 13 लोगों के मरने की पुष्टि हो चुकी है। उन्होंने बताया कि शवों को पोस्टमार्टम के लिए जोशीमठ लाया जा रहा है। मृतकों में से 11 की पहचान हो गयी है जो झारखंड के निवासी थे। इसके अलावा, घटना में घायल हुए लोगों का उपचार किया जा रहा है। इनमें से पांच घायल जोशीमठ सेना अस्पताल में भर्ती हैं जबकि दो अन्य को देहरादून भेजा गया है। मलारी गांव से करीब 25 किलोमीटर दूर सुमना, धौलीगंगा नदी से निकलने वाली दो धाराओं, गिरथीगाड और किओगाठ के संगम पर स्थित है और हिमस्खलन के समय मौके पर सीमा सड़क संगठन का निर्माण कार्य चल रहा था जहां मजदूर काम कर रहे थे। चमोली की जिलाधिकारी स्वाति भदौरिया ने कहा कि 384 लोगसुरक्षित निकाले जा चुके हैं। लापता लोगों के बारे में उन्होंने कहा कि सीमा सड़क संगठन के अधिकारियों से इस बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। उन्होंने बताया कि जल्द ही घटना के प्रभावितों को सहायता राशि उपलब्ध करा दी जाएगी। मौके पर भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल, राज्य आपदा प्रतिवादन बल, जिला प्रशासन और सीमा सड़क संगठन की संयुक्त टीम द्वारा तलाश एवं बचाव अभियान चलाया जा रहा है।

भारत को भाजपा के सिस्टम का शिकार नहीं बनने दिया जाएगा : राहुल गांधी

नयी दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने देश में कोरोना वायरस संक्रमण के खिलाफ मुफ्त टीकाकरण की पैरवी करते हुए सोमवार को कहा कि भारत को भाजपा के सिस्टम का शिकार नहीं बनाया जाए। उन्होंने ट्वीट किया, चर्चा बहुत हो चुकी। देशवासियों को वैक्सीन मुफ़्त मिलनी चाहिए- बात खत्म। मत बनाओ भारत को भाजपा सिस्टम का शिकार। राहुल गांधी और कांग्रेस पिछले कई हफ्तों से यह मांग कर रहे हैं कि देश के सभी नागरिकों कोमुफ्त टीका उपलब्ध कराया जाए। उल्लेखनीय है कि सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया द्वारा निर्मित कोविशील्ड टीका राज्य सरकारों को 400 रुपये प्रति खुराक और निजी अस्पतालों को 600 रुपये में मिलेगा। दूसरी तरफ, भारत बायोटेक का टीका कोवैक्सीन टीका प्रति खुराक राज्यों को 600 रुपये और निजी अस्पतालों को 1200 रुपये में मिलेगा। वैसे, कई राज्य सरकारों ने घोषणा की है कि उनके यहां लोगों को मुफ्त में टीका लगाया जाएगा।

कैलाश विजयवर्गीय का दावा, बंगाल चुनाव हार चुकी हैं ममता बनर्जी

नई दिल्ली। देश में कोरोना वायरस संकट के बीच पश्चिम बंगाल में चुनाव भी जारी है। अब तक छह चरण के मतदान हो गए हैं जबकि आज सातवें चरण का मतदान हो रहा है। इन सबके बीच राजनीतिक वार-पलटवार भी जारी है। भाजपा के पश्चिम बंगाल प्रभारी कैलाश विजयवर्गीय ने बड़ा बयान दिया है। कैलाश विजयवर्गीय ने दावा किया कि ममता बनर्जी चुनाव हार चुकी हैं। विजयवर्गीय ने कहा कि नंदीग्राम के चुनावों के पहले उनके बयान कुछ और होते थे। नंदीग्राम के बाद के बयान निराशा वाले बयान हैं क्योंकि उनको पता लग गया है कि नंदीग्राम में वे हार चुकी हैं। उनको पता लग गया कि जनता ने उनका असली चेहरा पहचान लिया है।

अमेरिका को साधने के बाद चर्चा में डोभाल, 24 घंटे में कैसे भारतीय विदेश नीति ने दिखाया कमाल

नई दिल्ली। भारत में कोरोना की दूसरी लहर से पैदा संकट से निपटने के लिए अमेरिका के आगे आने के बाद से राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल चर्चा में हैं। अजित डोभाल ने अपने अमेरिकी समकक्ष जेक सुलिवन से इस मसले पर बात की थी। उनकी इस बातचीत के बाद ही अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और फिर राष्ट्रपति जो बाइडेन ने भारत को कोविशील्ड वैक्सीन के लिए कच्चे माल की सप्लाई का वादा किया है। इस ऐलान के बाद से ही अजित डोभाल ट्विटर के टॉप ट्रेंड में हैं। कई ट्विटर यूजर्स का कहना है कि जहां अजित डोभाल हैं, वहां राह है। अमेरिका को इनकार से इकरार तक लाने वाले अजित डोभाल की जमकर तारीफ की जा रही है।

इस बीच अमेरिका के जॉन एफ. केनेडी एयरपोर्ट से 318 ऑक्सीजन कन्सनट्रेटर्स को लेकर एयर इंडिया का विमान दिल्ली के लिए रवाना हो गया है। इसके अलावा संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब जैसे देशों ने भी ऑक्सीजन की सप्लाई में भारत को मदद की पेशकश की है। अमेरिका ने अपने नजदीकी एयरबेस से कहा है कि वह ऑक्सीजन जनरेटर्स को एयरलिफ्ट करे। इसके अलावा रेमडेसिविर इंजेक्शन और कोविशील्ड वैक्सीन के कच्चे माल की सप्लाई भी शुरू की जाए। अमेरिका ने कहा है कि वह भारत

को वैक्सीन के कच्चे माल की सप्लाई के लिए हरसंभव प्रयास कर रहा है।

सऊदी अरब और यूएई से बातचीत कर रहे हैं डोभाल- अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने अपने ट्वीट में कहा, 'जैसे भारत ने अमेरिका को मदद दी थी, जब हमारे अस्पताल कोरोना के संकट से जूझ रहे थे।' जो बाइडेन ने अपने इस ट्वीट के साथ ही अजित डोभाल और जेक सुलिवन के बीच हुई बातचीत को भी अटैच किया है। बता दें कि पीएम नरेंद्र मोदी के आदेश पर अजित डोभाल और विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब से बातचीत शुरू की है। माना जा रहा है कि अजित डोभाल सऊदी अरब और यूएई से बात कर रहे हैं। वहीं विदेश मंत्री एस. जयशंकर यूरोपियन यूनियन से बात कर रहे हैं। खासतौर पर वह फ्रांस से संपर्क में हैं ताकि ऑक्सीजन कन्सनट्रेटर्स, रेमडेसिविर और वैक्सीन के लिए कच्चे माल की सप्लाई सुनिश्चित की जा सके।

अब तक इन 9 देशों ने दिया भारत को मदद का भरोसा- आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक यूएई ने बताया है कि भारत को वैक्सीन की बड़ी खेप भेज रहा है। इसके अलावा सऊदी अरब की ओर से भी ऑक्सीजन जनरेटर्स की सप्लाई की जा रही है। ब्रिटेन की ओर से भी बड़ी संख्या में ऑक्सीजन जनरेटर्स की सप्लाई की जा रही है। भारत को अब तक कुल 9 देशों की ओर से कोरोना संकट में मदद का भरोसा मिला है।

भारत के हालात देख दिल टूट गया, मदद को आगे आए सत्या नडेला और सुंदर पिचाई

नई दिल्ली। भारत में कारोना महामारी की दूसरी लहर में तेजी से बढ़ते संक्रमण को लेकर विश्व स्तर पर आईटी सेक्टर की दिग्गज कंपनियों में शामिल भारतीय मूल के सीईओ ने चिंता जताई है। माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ सत्य नडेला ने भारत में कोविड-19 की मौजूदा स्थिति पर दुख व्यक्त किया। वहीं, गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने मदद का वादा किया है।

सत्य नाडेला ने ने कहा कि कोरोना वायरस महामारी की दूसरी लहर के कारण भारत में उत्पन्न हुई स्थिति से वह काफी दुखी हैं और राहत उपायों में मदद करने का वादा करते हैं। नडेला ने अपने ट्वीट में कहा है कि मैं भारत की वर्तमान स्थिति से बहुत दुखी हूं। मैं आभारी हूं कि अमेरिकी सरकार मदद करने में जुट गई है। माइक्रोसॉफ्ट राहत प्रयासों में सहायता के लिए अपनी आवाज, संसाधनों और टेक्नोलॉजी का उपयोग को जारी रखेगा।

सुंदर पिचाई के ट्वीट के मुताबिक, 'भारत में कोरोना संकट को देखते हुए गूगल ने 135 करोड़ रुपये का फंड देने का फैसला किया है। यह फंड 'Give India' और यूनिसेफ के जरिए भारत को मिलेंगे।'

'Give India' को दिए गए फंड से उन लोगों को आर्थिक मदद दी जाएगी जो कोरोना के कारण सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं, ताकि वे अपने रोजमर्रा के खर्च उठा सकें। इसके बाद, यूनिसेफ के जरिए ऑक्सीजन और टेस्टिंग उपकरण सहित अन्य मेडिकल सप्लाई दी जाएगी। गूगल के कर्मचारी भी भारत के लिए चंदा इकट्ठा करने के लिए अभियान चला रहे हैं। अभी तक 900 गूगल कर्मियों ने 3.7 करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा किया है। बता दें कि भारत में रविवार को कोरोना के साढ़े तीन लाख से ज्यादा नए मामले दर्ज किए गए हैं। ये अभी तक किसी देश में एक दिन के अंदर आए सर्वाधिक मामले हैं। वहीं, कोरोना के कारण 2800 से ज्यादा मरीजों ने दम तोड़ा है। यह भारत में कोरोना से होने वाली सबसे ज्यादा मौतें हैं।

संपादकीय

कसौटी पर जलवायु

कोरोना संकट की वजह से उपजी मौजूदा स्थिति को अगर कुछ देर के लिए किनारे रख भी दिया जाए तो पिछले कुछ दशकों के दौरान जलवायु में आ रहे बदलावों को लेकर लगातार वैश्विक स्तर पर चिंता जताई जाती रही है। विडंबना यह है कि इस मसले पर सालों से हो रहे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में व्यापक विचार और बहसों के बावजूद अब तक किसी ठोस नतीजे और कार्ययोजना तक पहुंचने में कामयाबी नहीं मिल सकी है। खासतौर पर विकसित देशों का रवैया ऐसा विरोधाभासी रहा है कि वे चिंता जताने और सख्ती बरतने के मामले में ठोस कदम उठाने की बात तो करते हैं, लेकिन अपनी उन नीतियों पर पुनर्विचार के लिए तैयार नहीं होते हैं जो ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। इसके बावजूद सच यही है कि जलवायु में अस्वाभाविक उतार-चढ़ाव विश्व की चिंता बनी हुई है और इसके हल के लिए कोशिशें जारी हैं। इसी क्रम में गुरुवार से शुरू हुए जलवायु शिखर सम्मेलन में दुनिया के चालीस नेताओं ने हिस्सा लिया, जिसमें एक बार फिर कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के मकसद से विश्व के नेताओं को एकजुट करने के लिए प्रतिबद्धता जताई गई। गौरतलब है कि अब तक कार्बन उत्सर्जन को लेकर विकसित देशों का रुख उत्साहजनक नहीं रहा है। लेकिन इस बार अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देशों की ओर से जैसी राय सामने आई है, अगर वे उस पर अमल की ओर भी बढ़े तो इस मसले पर एक सकारात्मक सफर के शुरू होने की उम्मीद की जा सकती है। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने साफ लहजे में कहा कि ये जोखिम के क्षण हैं, लेकिन अवसर के भी क्षण हैं॥ अमेरिका और विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं को जलवायु परिवर्तन से निपटने का काम करना ही होगा। दूसरी ओर, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने भी दुनिया के धनी देशों को इसमें आगे बढ़ कर निवेश करने की जरूरत पर जोर दिया। जापान ने भी 2030 तक उत्सर्जन कटौती का लक्ष्य बढ़ा कर छियालीस फीसद करने का फैसला लिया। जाहिर है, जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान के सबसे मुख्य कारण ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को लेकर इस वैश्विक सम्मेलन में पहले के मुकाबले साफ तस्वीर दिख रही है और विकसित धनी देशों की ओर से नई पहल सामने आ रही है। दरअसल, अब तक जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान के संकट से लड़ाई शुरू करने की योजनाओं में विकसित देशों की ओर से लगभग समूचा बोझ विकासशील देशों पर ही डाला जाता रहा है। जबकि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के मुख्य जिम्मेदार विकसित देश और खासतौर पर अमेरिका और चीन ही रहे हैं। अब इस बार के सम्मेलन में प्रस्तावों और विचारों की कसौटी पर तो सक्षम देशों के नेताओं के बयान में नेक इरादों की झलक मिलती है, लेकिन यह देखने की बात होगी कि इन पर अमल के मामले में वे क्या ठोस पहल करते हैं। हालांकि इतना तय है कि महामारी के दौर में जिस तरह अनेक पहलुओं पर विमर्श की जमीन बनी है, ऐसे माहौल में हुए इस आयोजन से जलवायु परिवर्तन का मुद्दा फिर से विश्व भर में एक मुख्य कार्यक्रम के रूप में सामने आ सकता है। लेकिन सवाल है कि क्या इरादे जताने से आगे इतनी ही शिद्दत से ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती की मुख्य चुनौती से निपटने और अक्षय ऊर्जा स्रोतों की ओर बढ़ने के लिए किसी ठोस कार्ययोजना तक भी पहुंचने की स्थिति बनेगी?

है जीतना तय !

लड़ रहा है देश ।
है जीतना तय ।।
खबर मिले अब जल्दी ।
पकड़ी हमने लय ।।
होगी किल्लत दूर ।
कर रहे जो सामना ।।
रख लो थोड़ा धीरज ।
होगा शुभ-शुभ रे मना ।।
संकट में है देश ।
पर उबरेंगे शीघ्र ।।
करना मन को शांत ।
क्या होना अब उग्र ?
धैर्य में भलाई ।
रहे बात यह ध्यान ।।
एकजुट ही रहना ।
टूटे ना विधान ।।

-कृष्णेन्द्र राय

अर्थव्यवस्था को टीके की आस

सरोज कुमार मिश्र

महामारी की पहली लहर से बेपटरी हुई अर्थव्यवस्था अभी पटरी पर लौटना शुरू भी नहीं हुई थी कि दूसरी लहर कहर बरपाने लगी। इस बार की लहर कहीं ज्यादा व्यापक और तीव्र है। दैनिक संक्रमण के मामले साढ़े तीन लाख के पार निकल गए हैं और मरने वालों का रोजाना का आंकड़ा भी तीन हजार के करीब पहुंच चुका है। ऐसे में संक्रमण से निपटने के लिए सरकारों को फिलहाल पूर्णबंदी जैसे ही कड़े प्रतिबंधों के अलावा कोई चारा नजर आ भी नहीं रहा। इसलिए ज्यादातर राज्यों ने फिर से कड़े प्रतिबंध और आंशिक पूर्णबंदी जैसे उपायों का सहारा लेना शुरू कर दिया है।

कहने को फिलहाल कारोबार और औद्योगिक गतिविधियों को इस सख्ती से अलग रखा गया है। लेकिन जब व्यापकस्तर पर लोगों की आवाजाही पर ही रोक लग जाएगी तो आर्थिकी इससे कैसे अछूती रह सकती है! भले इस बार आर्थिक गतिविधियां बनाए रखने की भरसक कोशिशों के दावे हो रहे हों, पर सख्त पाबंदियों के कारण अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्र खासतौर से अनौपचारिक क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। अर्थव्यवस्था पर क्या और कितना असर होना है, इसका अंदाजा लगाने के लिए हमारे पास अनुभव और आंकड़े उपलब्ध हैं। दो महीने से ज्यादा की पूर्णबंदी के कारण वित्त वर्ष 2020-21 में भारत की अर्थव्यवस्था रसातल में चली गई थी। तब पहली तिमाही में विकास दर शून्य से 24.4 फीसद और दूसरी तिमाही में शून्य से 7.50 फीसद नीचे दर्ज की गई थी। धीरे-धीरे आर्थिक गतिविधियां बहाल होने के बाद तीसरी तिमाही में विकास दर शून्य से ऊपर (0.5 फीसद) आई और चौथी तिमाही में इसके और ऊपर उठने का अनुमान है। इसके आंकड़े अभी आने हैं। महामारी की दूसरी लहर को काबू करने के लिए राष्ट्रव्यापी पूर्णबंदी तो लागू नहीं है, लेकिन अलग-अलग राज्यों में लागू सख्त पाबंदियों और संक्रमण के भय के कारण जो माहौल बन गया है, उससे आर्थिक गतिविधियों के दरवाजे फिर बंद होने लगे हैं।

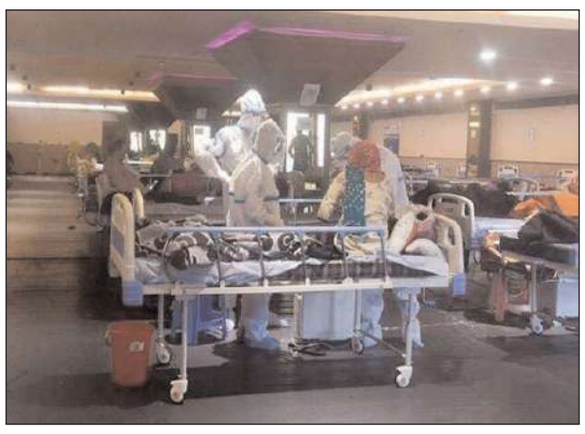

उड्डयन, ऑटोमोबाइल, पर्यटन, मॉल, स्पा, होटल, रेहड़ी-पटरी जैसे छोटे-बड़े क्षेत्रों के कारोबार एक बार फिर से ठप होने के कगार पर हैं। घरेलू हवाई यात्रियों की संख्या में लगातार गिरावट हो रही है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक 20 अप्रैल को 155,207 यात्रियों ने घरेलू उड़ानों में यात्रा की। इसके पहले 19 अप्रैल को यह आंकड़ा 169,971 यात्रियों का था और 17 अप्रैल को घरेलू हवाई यात्रियों की संख्या 182,189 थी। जबकि फरवरी के अंत में घरेलू हवाई यात्रियों की एक दिन की संख्या 313,000 थी, जो पिछले मई में उड़ानों की बहाली के बाद यात्रियों की सर्वाधिक संख्या थी। महामारी की दूसरी लहर का वाहन उद्योग पर बुरा असर पड़ा है। कई कारखानों में उत्पादन एक बार फिर ठहर-सा गया है। देश में बनने वाले कुल वाहनों का एक-चौथाई हिस्सा अकेले महाराष्ट्र में बनता है, लेकिन वहां इन दिनों सख्त पाबंदियां लगी हैं और कारखाने सामान्य दिनों की तुलना में पचास-साठ फीसद क्षमता के साथ ही संचालित हो रहे हैं। इससे सौ से सवा सौ करोड़ रुपए प्रतिदिन का नुकसान हो रहा है। मरीजों के लिए ऑक्सीजन की भारी मांग के कारण इस्पात संयंत्रों को होने वाली आपूर्ति अस्पतालों की ओर मोड़ दी गई है। इस कारण इस्पात कारखानों में भी उत्पादन बंद हो गया है। पाबंदियों के कारण असंगठित क्षेत्र सबसे ज्यादा प्रभावित है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) के ताजा आंकड़ों के अनुसार भारत की 90.7 फीसद श्रमशक्ति असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है, लिहाजा इस क्षेत्र के प्रभावित होने से बड़ी संख्या में लोगों के बेरोजगार होने का खतरा पैदा हो गया है। इसी तरह शहरों और महानगरों में खरीदारी के बड़े ठिकानों के भी बुरे दिन लौट आए हैं। देशभर में मॉल कारोबार नब्बे प्रतिशत तक लौट आया था, लेकिन महामारी की दूसरी लहर के कारण अप्रैल में इस क्षेत्र के कारोबार पर फिर से ग्रहण लग गया। हर महीने पंद्रह हजार करोड़ रुपए की कमाई करने वाले इस क्षेत्र की कमाई स्थानीय पाबंदियों के कारण घट कर आधी भी नहीं रह गई है। आर्थिक अनिश्चितता के कारण उपभोक्ताओं का भरोसा भी डगमगाया है। रिफिनिटिव-इप्सास के मासिक प्राइमरी कंज्यूमर सेंटीमेंट इंडेक्स (पीसीएसआइ) के अनुसार, उपभोक्ताओं के भरोसे में पिछले एक महीने के दौरान 1.1 फीसद की गिरावट आई है। उपभोक्ता भावना में गिरावट से मांग घटती है और मांग घटने से उत्पादन प्रभावित होता है और बेरोजगारी बढ़ती है। गूगल मोबिलिटी डेटा के अनुसार खुदरा और मनोरंजन गतिविधियों में सात अप्रैल तक ही 24 फरवरी की तुलना में पच्चीस फीसद की गिरावट आ चुकी थी। जबकि उस समय राज्यों में पाबंदियां लागू नहीं हुई थीं। आज महाराष्ट्र, गुजरात और दिल्ली सहित कई राज्यों में सख्त पाबंदियां लगी हैं। इस कारण आवश्यक सेवाओं को छोड़ बाकी गतिविधियां बंद हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि अकेले महाराष्ट्र और गुजरात मिल कर देश की जीडीपी में बाईस से पच्चीस फीसद का योगदान करते हैं। इन दोनों राज्यों में आर्थिक गतिविधियों के बाधित होने से देश की अर्थव्यवस्था को होने वाले नुकसान का अंदाजा लगाया जा सकता है। अर्थव्यवस्था की सेहत मापने का सटीक पैमाना बेरोजगारी दर होता है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सीएमआइई) के आंकड़े के अनुसार 23 अप्रैल को देश की बेरोजगारी दर 7.74 फीसद हो गई, जो मार्च में 6.52 फीसद थी। अप्रैल में बेरोजगारी दर में लगातार वृद्धि का रुझान बना हुआ है और महीने के अंत तक यह आठ फीसद से ऊपर जा सकती है। यानी तब हम अगस्त 2020 की स्थिति में पहुंच जाएंगे, जब बेरोजगारी दर 8.35 फीसद थी। उसके बाद के महीनों में दिसंबर (9.06 फीसद) को छोड़ कर यह छह से सात फीसद के बीच बनी रही। यानी हमने अगस्त से मार्च तक आठ महीनों में जो हासिल किया था, वह एक महीने के दौरान हाथ से निकल चुका है। रेटिंग एजेंसियों और ब्रोकरेज कंपनियों ने विकास दर के अपने अनुमान घटा दिए हैं। मूडीज ने भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने ऋणात्मक साख की जोखिम की आशंका जताई है, यानी आर्थिक गतिविधियां सुस्त होने से लेनदार न कर्ज लेने की स्थिति में रहेंगे और न चुकाने की स्थिति में। लक्षण स्पष्ट हैं, क्योंकि बैंकिंग प्रणाली में अतिरिक्त धनराशि बढ़ती जा रही है। बैंकों द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) में जमा जो राशि 31 मार्च को अड़तीस खरब रुपए थी, वह 18 अप्रैल तक बढ़ कर 55.5 खरब रुपए हो गई। यानी बैंकों द्वारा कर्ज देने या लेनदारों द्वारा कर्ज लेने की रफ्तार में अप्रत्याशित गिरावट आई है। मूडीज ने कहा है कि यदि संक्रमण की स्थिति नियंत्रित नहीं हो पाई तो वित्त वर्ष 2021-22 में 13.7 प्रतिशत विकास दर के उसके अनुमान को हासिल कर पाना भारत के लिए कठिन हो सकता है। हालांकि एजेंसी का अनुमान अभी भी दो अंकों की विकास दर का है। फिच ने भी अपने विकास दर अनुमान को घटा दिया है। नोमुरा, जेपी मॉर्गन, यूबीएस और सिटी रिसर्च जैसी ब्रोकरेज कंपनियों ने भी भारत के लिए अपने विकास दर अनुमान घटा दिए हैं। लेकिन दो अंकों की दर पर सभी एकमत हैं। आर्थिक जानकारों का मानना है कि मौजूदा वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही तक अर्थव्यवस्था में गिरावट रहेगी।

आक्सीजन

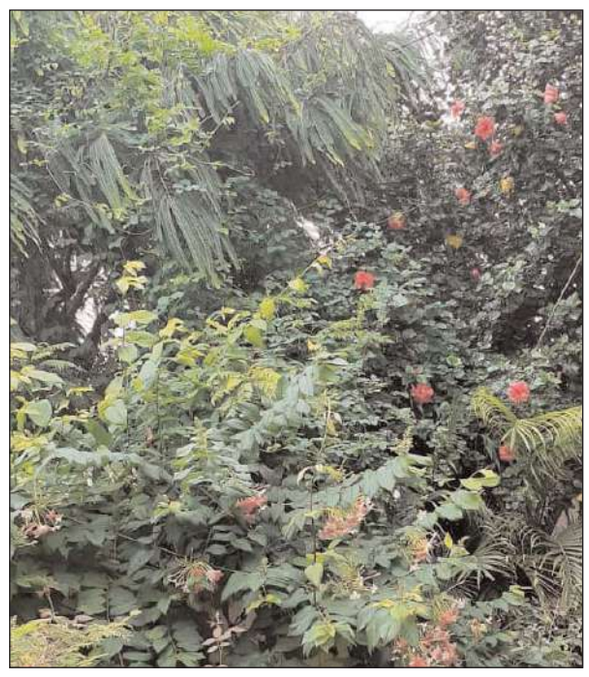

आज आक्सीजन के लिए मारा-मारी हो रही है।इसकी कालाबाजारी हो रही है ।इसका अब विदेशों से भी आयात होने लगा है।मरता क्या नहीं करता है ।लेकिन क्या इसके लिए हम सभी लोग खुद जिम्मेदार नहीं हैं? जो भी पेड़-पौधे सबसे अधिक आक्सीजन छोड़ते थे और कार्बनडाइऑक्साइड सोखते थे।उनका तो हमलोगों ने सफाया कर दिया है ।नीम और पीपल जो सबसे अधिक पर्यावरण को संरक्षित तो करते ही थे साथ ही आक्सीजन भी अधिक छोड़ते थे ।अब कहीं-कहीं ये वृक्ष दिखाई देते हैं ।गाँव भी इससे अछूते नहीं रहे ।शहर की तो बात ही छोड़ दीजिए ।

वास्तव में यदि प्राकृतिक आक्सीजन मिले।जीवन को सुरक्षित रखने के लिए प्रयास कीजिए कि अधिक से अधिक वृक्षों को अपने आसपास लगाकर उनका संरक्षण कीजिए ।शहर के लोग अपने घर के सामने या छतों पर गमलो में ही तुलसी सहित आक्सीजन देने वाले पौधों को अवश्य लगाइए।इसे अपना शौक बना लीजिये ।फिर क्या-आनंद ही आनंद ।डा जगदीश सिंह दीक्षित जो पेशे से शिक्षक रहे हैं ।अपने बचपन से ही वृक्षों से अपना नाता जोड़ रखा है ।गाँव से लेकर अपने शहर के मकान के आगे और बगल के खाली प्लाट में फूल के पौधों के अलावा आंवला, नीबू, अमरूद, केला के साथ-साथ सब्जी की खेती भी अवकाश प्राप्त करने के बाद भी कर रहे हैं ।इनके यहाँ आक्सीजन की कोई कमी नहीं है ।आप जबसे जगे तभी से सबेरा।

प्रधानमंत्री ने स्वानुशासन की जो लक्ष्मण रेखा खींची है, उसका पालन करें तो कोरोना से बच जाएंगे

राकेश सैन

गान्धी जी कहा करते थे, कि स्वानुशासन यानी अपने (स्वः) पर अनुशासन किसी सभ्य समाज की कसौटी होता है। उन्होंने ये कहा ही नहीं बल्कि इसको अपने जीवन में लागू भी करके दिखाया और यही कारण रहा कि उनका हर आन्दोलन इस सिद्धान्त की उदाहरण बना। दुनिया कोरोना की दूसरी लहर से स्तब्ध हुई, अब चुनौती भारत में है। देश के प्रायः सभी हिस्सों में मास्क न लगाने सहित अनेक अनुशासनहीन दृश्य आम हैं। प्रश्न है कि क्या हम आपदाओं को आदतन बुलाते हैं ? सामूहिक व्यवहार में यह असावधानी क्यों ? स्वानुशासन के बगैर, व्यवस्थित समाज, राज और व्यवस्था चल सकती है ?

मुम्बई से एक गाड़ी, एक राज्य की राजधानी पहुंचती है। स्टेशन पर व्यवस्था थी कोविड टेस्ट की। जानकारी मिलते ही यात्री उससे पहले वाले स्टेशन पर उतर गए। अब खबर है कि रेमडेसिविर इन्जेक्शन ब्लैक हो रहा है। दिल्ली का एक दृश्य सोशल मीडिया पर छाया है, जिसमें कार सवार एक पुलिस अधिकारी की बेटी मास्क के लिए पूछे जाने पर पुलिस वालों से ही झगड़ा करती है और कहती है कि वह कार में बैठे पति का चुम्बन भी लेगी, आप क्या करोगे ? सरकार, पुलिस, प्रशासन, कानून की एक सीमा है। आपदा के क्षणों में नागरिक कर्तव्य क्या हैं,

दूसरों को खतरे में डालना ? यही आचरण, स्वतन्त्रता है ? गान्धी जी ने पहला आश्रम दक्षिण अफ्रीका में बनाया तो आत्मानुशासन वहां की आचार संहिता में था। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन में छात्रों ने अनुशासन की शर्त स्वीकारी। उसी देश में आज इस संकट में स्वानुशासन कहां है ? 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' के सिद्धान्त वाले देश में, हम अपने आचरण से औरों के जीवन को संकट में डाल रहे हैं। हमारे शास्त्रों, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, इतिहास, सामाजिक व्यवस्था में स्वानुशासन बुनियाद में है। नियम पालन का धैर्य हम खो रहे हैं। पहले कोरोना दवा के खिलाफ अफवाहें उड़ाई गईं और अब दवा के फर्जी दस्तावेज बन रहे हैं, दवा व गैस सिलेण्डरों की ब्लैक हो रही है।

कोविड के पहले दौर में लेखक युवल नोआह हरारी अपनी पुस्तक 'ट्वेंटी फर्स्ट लेसन फॉर द ट्वेंटी फर्स्ट सेञ्चुरी' में कहते हैं, आज दुनिया के हर इन्सान के लिए सबसे अहम सवाल है कि मैं कौन हूं ? जीवन का उद्देश्य क्या है ? जीवन में क्या करना है ? वे मानते हैं कि हर एक इन्सान की लौकिक दुनिया में एक विशिष्ट भूमिका है। कारण, इस जगत में हर एक दूसरे से जुड़ा है। अपने एक अन्य लेख 'द वर्ल्ड आफ्टर कोरोना वायरस' (2020) में उन्होंने कहा कि 'हमें दीर्घकालिक परिणामों पर ध्यान रखना होगा। अंततः यह तूफान गुजरेगा, मानवता बचेगी। पर हम एक नयी दुनिया-व्यवस्था में रहेंगे।' पर सवाल पैदा होता है कि क्या ऐसे आचरण के साथ हम नई व्यवस्था का सृजन कर पाएंगे ?

सभ्य समाज अपनी नैतिक ऊंचाई से मापा जाता है। यह निजी आचरण व सामाजिक आचार संहिता से तय होता है। भारत राजा शिवि और दधीचि जैसे ऋषियों की परम्परा का देश है, जिन्होंने समाज कल्याण के लिए खुद का प्राणदान दिया। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने देश को सम्बोधित करते हुए कोरोना संक्रमण के दूसरे हमले के प्रति बेहद चिन्ता जताते हुए लोगों से कोरोना प्रतिबन्धों और नियमों के कड़ाई और ईमानदारी से पालन करने की अपील की। उन्होंने रामनवमी और रमजान का जिक्र करते हुए भगवान श्रीराम की मयार्दा पालन की शिक्षा और रमजान के संयम की भी याद दिलाई। प्रधानमन्त्री मोदी देश के सर्वोच्च और सर्वाधिक लोकप्रिय नेता हैं और उम्मीद है कि लोग उनकी अपील पर ध्यान देकर अपने व्यवहार को कोरोना संकट काल की जरूरतों के मुताबिक नियमित और मर्यादित रखेंगे। प्रधानमन्त्री ने एक तरह से कोरोना संकट काल में मयार्दा की रेखा खींची है जिसका अनुपालन देश के सर्वोच्च स्तर से लेकर आम जन तक को करना होगा। लेकिन यदि स्वानुशासन का पालन किया गया होता तो बहुत से लोगों को असमय मरने से या अस्पतालों में गम्भीर रूप से बीमार होकर भर्ती होने या घरों में बीमार होकर बन्द रहने से बचाया जा सकता था। कोरोना की दूसरी लहर को टाला जा सकता था। केवल जनता ही क्यों, हमारी सरकारों व नेताओं ने भी यह मान लिया था कि कोरोना अब आई-गई बात हो चुका है। अगर ऐसा न होता तो पिछले एक साल में देश की स्वास्थ्य प्रणाली को इतना तो चूकरहित बनाया जा सकता था कि महामारी की नई लहर के दौरान इतनी अफरा-तफरी न मचती। प्रश्न बहुत हैं परन्तु समय आरोप-प्रत्यारोप का नहीं। फिलहाल सरकारों को अपना काम करने और जनता को स्वानुशासन लागू करने की आवश्यकता है।

गर्मियों में क्यों बालों में पड़ जाती हैं गांठे

हम में से कई लोगों के बाल शैम्पू करने के बाद उलझने लगते हैं, कंघी करते वक्त इन बालों में गांठें बनने लगती है। अगर ये लगातार उलझे हुए रहने लगें तो इससे ये कमजोर होकर टूटने लगते हैं। गर्मियों में तो यह समस्या और भी ज्यादा रहने लगती है। बालों को उलझने से बचाने के लिए कंडीशनर और हेयर स्पा जैसे हेयर केयर प्रॉडक्ट से बालों को सुलझाया जाता सकता है, लेकिन नतीजे से पहले आपको इस बात की तह तक जाना बहुत जरुरी है। आखिर बाल उलझने की मूल वजह क्या है। इस वजह को जानकर आप अपने बालों को उलझने से बचा सकते हैं।

डिहाइड्रेशन की वजह से

गर्मियों में डिहाइड्रेशन सिर्फ शरीर में ही नहीं होती है, बल्कि ये बालों में भी होती है। अगर शरीर में पानी की कमी हो जाए तो बाल भी उलझने लगते हैं। रूखे बाल आपस में बुरी तरह उलझ जाते हैं और उन्हें सुलझाना मुश्किल होता है। जब बाल अच्छी तरह हाइड्रेटेड नहीं रहते, तो बाल कमज़ोर और संवेदनशील हो जाते हैं, जिससे वे बीच से ही टूटने लगते हैं। इसलिए नियमित रूप से बालों को कंडीशनर करें और बीच-बीच में मॉइस्चराइज़िंग हेयर मास्क का भी इस्तेमाल करें। ढेर सारा पानी और लिक्विड पिएं, ताकि शरीर के साथ आपके बाल हाइड्रेटेड रहें।

अल्कोहल युक्त शैम्पू का न करें इस्तेमाल

अल्कोहल युक्त हेयर केयर प्रॉडक्ट्स का इस्तेमाल न करें। इससे बालों की नमी जाने लगती है। शैम्पू, कंडिशनर से लेकर हेयर स्टाइलिंग प्रॉडक्ट्स तक में अल्कोहल मुक्त का लेबल देखकर ही प्रॉडक्ट्स ख़रीदें। क्योंकि अल्कोहल युक्त प्रॉडक्ट्स के नियमित इस्तेमाल से बाल रूखे और बेजान होने लगते हैं और इस वजह से बाल उलझने लगते है और गांठे बन जाती है। बालों को खुला छोड़कर सोने पर बाल खुले रखकर सोने से वे उलझ जाते है। इसलिए ढीली-ढाली चोटी बनाकर सोएं और यदि आप सहज न हों, तो शुरुआत करने के लिए ढीली पोनी बना सकती हैं। बालों की सही तरह से करें कंघी कई बार सुबह जल्दबाज़ी में हम बालों को कंघी करना भूल जाते हैं। बालों में हाथ फिराकर बाल तो थोड़े-बहुत सेट हो जाएंगे, लेकिन कंघी न करने पर बालों की सेहत ज़रूर बिगड़ जाएगी। लंबे समय तक कंघी न करने पर बालों में गांठ भी पड़ जाती है। दिन में कम से कम दो बार कंघी ज़रूर करें। इससे बाल जल्दी उलझेंगे नहीं। चौड़े दांतोंवाली कंघी का इस्तेमाल करें, ताकि बाल कम से कम टूटें। रात को कंघी करे बिना सोने से भी बाल उलझ सकते हैं। इसलिए रात को सोने से पहले उन्हें सुलझाना न भूलें।

बालों को सही तरीके से सुखाएं

कुछ लोग बाल धोने के बाद उन्हें तेजी से रगड़ते हैं या झाड़ते हैं। यह बहुत गलत तरीका है। इससे बाल कमजोर होकर टूटने लगते हैं। शैम्पू करने के बाद बालों को तौलिया से बहुत आराम से पौंछे इसके लिए किसी पतले कपड़े का इस्तेमाल करें। बालों को तौलिए से ज्यादा कस कर न बांधें। धूप में बैठकर या कूलर के सामने बाल सुखाना भी बालों को नुकसान पहुंचाता है। इससे न केवल बाल उलझते हैं, बल्कि कमजोर होकर टूटने भी लगते हैं।

नीम हकीम से बच कर रहे

एक स्वस्थ व्यक्ति के जीवन का आधार होता है-संतुष्ट सेक्स जीवन। लेकिन, पश्चिमी देशों के विपरीत हमारा समाज हमें प्यार को खुले तौर पर करने की इजाजत नहीं देता। सेक्स वह कला है जिसका वर्णन हमारे पूर्वजों द्वारा कई शतकों पहले कामसूत्र में भी किया जा चुका है। इससे जुड़े कई मिथ्य और भ्रांतियों ने इसे एक रुकावट बना दिया है। हालांकि शहरों मे यह चित्र तेजी से बदल रहा है। लेकिन, देश के अधिकतर भागों में ज्ञान की कमी और जानकारी के अभाव में लाखों लोग एक असंतुष्ट सेक्स जीवन जीने के लिए मजबूर हैं।

नई दिल्ली स्थित अशोक क्लिनीक रिसर्च सेंटर के विशेषज्ञ डॉ. अशोक गुप्ता के अनुसार आज भी, नपुंसकता एक ऐसा विकार है जिसे पुरुषों में सबसे अधिक खराब और हीन माना जाता है। इसके लिए दो तत्व बहुत जिम्मेदार होते हैं। पहला, ज्ञान की कमी, अंधविश्वास, अपराधबोध आदि से लोग सेक्स जीवन में नाकामयाब होते हैं। दूसरा, झूठे झांसे और ऐसे ठग व झोलाछाप डाक्टर, जो ऐसे मरीजों को धोखा देकर उनके जीवन को खतरे में डाल सकते हैं। ऐसे झांसे और झूठे दावा करने वाले सेक्सोलोजिस्ट मरीज की नासमझी का फायदा उठाते हुए उन्हें इस बात के लिए मजबूर कर देते हैं कि वे अपनी इस समस्या जैसे इरेक्टाइल डाइसफंक्शन को छिपा कर रखें और किसी से भी इसका जिक्र न करें।

अधिकतर एंड्रोलोजिस्ट के मुताबिक नपुंसकता या इरेक्टाइल डाइसफंक्शन एक आम विकार है। कहा जाता है कि लगभग दस प्रतिशत पुरुष इससे पीड़ित हैं। 40 की उम्र के लगभग 52 प्रतिशत लोग इसका शिकार होते हैं। आज भी शर्म और नासमझी के कारण केवल कुछ ही मरीज इलाज के लिए आगे आते हैं और अधिकतर लोग डाक्टर के बजाय किसी ठग या ढोंगी के पास जाना ज्यादा उचित समझते हैं। दरअसल, किसी भी पुरुष का अहम उसे इस बात को जगजाहिर करने की इजाजत नहीं देता जिससे उसके पौरुष पर कोई सवाल उठे। डा. गुप्ता, जिन्होंने हजारों मरीजों को इस समस्या से छुटकारा दिलाया है का कहना है कि यह बहुत ही दुर्भाग्यवश है क्यों कि अगर मरीज समय रहते प्रशिक्षित और अनुभवी डाक्टर के पास चले जाएं तो अधिकतर केसों में नपुंसकता का उपचार किया जा सकता है । अगर सेक्स से संबंधित मिथ्य और नासमझी की बात की जाए तो अशोक क्लीनिक के संस्थापक डा. अशोक गुप्ता के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में किए गए एंड्रोलोजिकल शोधों से यह पता चलता है कि मात्र व्यायाम और ऐरोबिक्स की मदद से भी कई मरीज अपना खोया हुआ पौरुष प्राप्त कर सकते हैं और शादीशुदा जीवन का आनंद उठाने के बीच में छोटी-मोटी रुकावटों को भी दूर कर सकते हैं। जबकि ठग, ढ़ोंगियों और झोलाछाप डाक्टरों को तो सबसे आखिरी विकल्प मानकर चलना चाहिए। एक नासमझ और शर्मीला व्यक्ति, जो कि ऐसे ढ़ोंगियों और झोलाछाप डाक्टरों के पास अपनी समस्या को लेकर जाता है, उसे यही विश्वास दिलाया जाता है कि नपुंसकता की वजह साइकोलोजिकल समस्या ही है जबकि 80 से 90 प्रतिशत केसों में क्रोनिक नपुंसकता दिमाग की नहीं बल्कि शारीरिक समस्या की वजह से होता है। डा.अशोक गुप्ता के मुताबिक ऐसा इसलिए भी होता है क्यों कि थोक के भाव में उपलब्ध ठगी और ढ़ोंगियों से अपनी समस्या का खुलासा करना ऐसे मरीजों को अधिक उपयुक्त और विकल्प दिखता है।

1998 में एसोसिएशन आफ मेडिकल कंसल्टेंट के द्वारा किए गए एक शोध से पता चलता है कि भारत में लगभग 1.5 मिलियन ठग और झोलाछाप डाक्टर हैं और मुंबई में लगभग 10,000 झोलाछाप डाक्टरों का बसेरा है। पिछले एक दशक से, यह आंकड़े 2.5 मिलियन को पार कर चुके हैं और शायद यह कहना गलत नहीं होगा कि इनमें 80 प्रतिशत ठग सेक्स समस्याओं से संबंधित हैं। इन रपटों में सबसे रोमांचक बात जो सामने आई है वह यह है कि उस समय महराराष्ट्र में 95,000 झोलाछाप डाक्टर थे और केवल 90,000 पंजीकृत डाक्टर। आई एम ए द्वारा किए गए शोध में यह भी पता चला कि हमारे देश में डाक्टरों से अधिक आंकड़े झोलाछाप डाक्टरों के हैं। अगर, गलती से एक झोलाछाप डाक्टर किसी भी कारण चाहे निदान या गलत उपचार के चलते एक वर्ष में एक मरीज को भी मारता है तो एक साल में लगभग 95,000 मर्डर होते हैं।

डा.अशोक गुप्ता का कहना है कि हालांकि इरेक्टाइल डाइसफंक्शन 13 वर्ष से लेकर 90 की उम्र में कभी भी हो सकता है और इसके कई कारण भी हो सकते हैं जैसे-मधुमेह, हाईपरटेंशन, हार्ट डिसीज, रेनल फेल्योर, न्यूरोलोजिकल डिसऑर्डर, चोट, दवाएं आदि। लेकिन, इसके आधारभूत कारण कुछ ही होते हैं। युवाओं और कॉलेज जाने वाले छात्रों में इस समस्या के होने का अधिकतर कारण होता है-चोट लगना, जो कि पेनिस तक जाने वाली धमनियों को अवरुद्ध कर देता है। किसी दुर्घटना आदि के बाद चोट गंभीर या तेज हो सकती है, जो कि पेल्विस की हड्डियों में फ्रेक्चर भी कर सकती है। कई केसों में बचपन में लगी चोट जवानी में आकर इस बीमारी का न्योता दे देती है। जो लोग नपुंसकता को दिमाग की बीमारी समझते हैं उन लोगों के लिए काउंसलिंग और सेक्स थैरेपी कारगर हो सकती है।

साइकोलोजिकल तत्व और सेक्सुअल अज्ञानता के चलते छोटी-मोटी समस्याओं का छुटकारा कोई भी प्रशिक्षित काउंसलर कर सकता है। पॉलिसी बनाने वाले भी इन ढ़ोंगी सेक्सोलोजिस्ट की लोकप्रियता से चिंतित होते हैं क्यों कि सरकारी हास्पिटलों में बढ़िया से बढ़िया सुविधा देने के बाद भी लोग इन झोलाछाप डाक्टरों के झांसे में आ जाते हैं। डा.अशोक गुप्ता के अनुसार, ऐसे मरीज सरकारी हास्पिटलों में जाने की बजाय ठग अप्रशिक्षित या झोलाछाप डाक्टरों के पास जाने में ज्यादा सहूलियत महसूस करते हैं। डा.अशोक गुप्ता के मुताबिक लोगों को और सरकार को इस बीमारी के प्रति अधिक जागरुक होना पड़ेगा। जिस तरह से एड्स, एचआईवी, कांडम आदि के प्रति लोगों में इतनी जानकारी पैदा की जा रही है ठीक उसी तरह इस समस्या को भी खुले तौर पर लाना पड़ेगा और लोगों में जानकारी और जागरुकता पैदा करनी पड़ेगी।

श्मशानघाट पर शव के साथ आए लोगों के पानी की व्यवस्था के लिए भाजपा सभासद ने लगे हैंडपंप का किया रियलिटी चेक

लगभग छः माह से खराब है हैंडपंप, विरोध के बाद पालिका प्रशासन ने आनन-फानन में पहुंचाया पानी का टैंकर

प्रखर रामनगर वाराणसी। कोविड-19 वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के बढ़ते हुए प्रभाव को देखते हुए भाजपा सभासद संतोष शर्मा स्थानीय श्मशानघट पहुंचकर 6 माह से खराब पड़ा हुआ हैंडपंप का किया रियलिटी चेक कर किया विरोध पालिका प्रशासन नेआनन-फानन में श्मशानघाट पर पहुंचाया टैंकर का पानी। साथ ही पूरे श्मशानघाट पर सैनेटाइज कराने का किया मांग। भाजपा सभासद संतोष शर्मा का कहना था कि कोविड-19 वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के बढ़ते हुए प्रभाव को देखते हुए स्थानीय श्मशानघाट पर शव यात्रियों के पानी के किल्लत को देखते हुए लगे हुए हैंडपंप का रियलिटी चेक किया गया तो उसमें पानी लगभग 6 माह से नहीं आ रहा है। और वह खराब पड़ा हुआ है उसके मरम्मत के लिए कई बार पालिका प्रशासन को अवगत कराया गया है, लेकिन अभी तक उसका मरम्मत नहीं हो पाया। इस संकट की घड़ी में काफी संख्या में लोग शव लेकर इस स्थानीय श्मशानघाट पर आ रहे हैं इस भीषण गर्मी में आए हुए लोगों को पानी पीने के लिए कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं है। यहां पर सेनेटाइज का भी व्यवस्था अभी तक नहीं हो पाया है। इस दौरान भाजपा सभासद ने लोगों से आग्रह करते हुए कहा कि खुद सुरक्षित रहें और अपने परिवार को सुरक्षित रखें। भाजपा सभासद संतोष शर्मा ने इस बाबत पालिका अध्यक्ष श्रीमती रेखा शर्मा को अवगत कराया और तत्काल प्रभाव से लोगों के पानी की समस्या को देखते हुए प्रतिदिन पानी का टैंकर भेजने की मांग की तब जाकर वहां पर पानी का टैंकर पहुंचा। पालिका अध्यक्ष श्रीमती रेखा शर्मा ने भाजपा सभासद संतोष शर्मा को आश्वासन देते हुए कहा कि श्मशानघाट को सैनेटाइज भी कराया जाएगा।

रामनगर में चोरों का हौसला बुलंद

प्रखर रामनगर वाराणसी। थाना क्षेत्र गोलाघाट में विष्णु कांत मिश्रा के मकान में मेन गेट का ताला तोड़कर घर में चोरी हो गया, मकान बंद करके पीड़ित अपने पत्नी के मर जाने के कारण परिवार सहित परोरवा गांव गए थे, चोरों ने घर में घुसकर पैसा सहित सोने की गहना पार कर दिए,पीड़ित ने अज्ञात के खिलाफ थाने में दिया तहरीर।

पद्म भूषण पंडित राजन मिश्रा का कोरोना से निधन, सपा ने जताया शोक

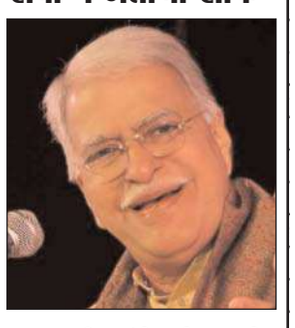

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। पद्म भूषण पंडित राजन मिश्रा का कोरोना के कारण रविवार को निधन हो गया। उन्होंने 70 वर्ष की उम्र में दिल्ली के एक अस्पताल में अंतिम सांस ली। रविवार को पंडित राजन मिश्रा को हृदय में समस्या होने के बाद दिल्ली के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया था लेकिन डॉक्टरों के अथक प्रयास के बाद भी उनकी जान नहीं बचायी जा सकी। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने ट्वीट कर शोक व्यक्त किया वही वाराणसी समाजवादी पार्टी के महानगर अध्यक्ष विष्णु शर्मा ने भी भारत के महान संगीतज्ञ पद्म भूषण ' व ' यश भारती ' से सम्मानित पंडित राजन मिश्र के कोरोना से निधन को अत्यंत दुःखद बताया है । श्री शर्मा ने कहा कि अपने अमर संगीत के माध्यम से वे सदैव हमारे बीच रहेंगे । श्री शर्मा ने कहा कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के कंठ गायन के पर्याय माने जाते थे वह हर कार्यक्रम मे सर्व प्रथम दो तीन रचनाएँ अवश्य सुनाते थे उनकी ख्याति देश विदेश मे अभूतपूर्व थी उनके निधन से बनारस अपितु संगीत की अपूरणीय क्षति है। ईश्वर दिवंगत की आत्मा को शांति एवं शोकाकुल परिजनों को यह दुःख सहने का संबल प्रदान करें ।

आधुनिकता की भेंट चढ़ गए मिट्टी के घर

मिट्टी में ही जन्में है और मिट्टी में ही वापस समाना है। तो फिर जीवन बिताने के लिए मिट्टी के घर से परहेज क्यों? सुख से जीना है तो एक अदद मिट्टी के घर का सपना देंखे, संगमरमर के ताजमहल का नहीं और फिर यह बात भी अपने दिलो-दिमाग से निकाल दें कि मिट्टी या मिट्टी का घर कहते ही आपको गरीब या गरीबी का मारा समझ लिया जाएगा बल्कि मिट्टी का सच समझिए और सुखी रहिए....

सदियों से मिट्टी के घर बनाने की जो परंपरा रही है वह कोई यूं ही नहीं चली आ रही। बल्कि आज भी यह परंपरा बखूबी जिंदा है तो सिर्फ इसलिए कि यह सस्ती सुलभ, टिकाऊ और अच्छी तरह आजमाई हुई सफल परंपरा है। रही बात इसके टिकाऊपन की सीमा की तो वह तो किसी भी पदार्थ से बने घर की अपनी एक आयु होती है और इसके बाद उसका क्षय होना निश्चित है और फिर क्षय होकर इसे अंततःमिट्टी ही तो बनना है। दुनिया में सबसे ज्यादा घर मिट्टी से बने हैं। लेकिन सबसे अधिक उपेक्षित मिट्टी ही मानी जाती है। खासकर मकान बनाने हो तो कभी कोई व्यक्ति मिट्टी के घर बनाने की बात नहीं सोचता। हरेक के जेहन में तुरंत उभरता है पक्के घर के रूप में सीमेंट, कंक्रीट से बना टाइल्स, मोजैक और संगमरमर लगा घर। जबकि इन सामग्रियों से बने घर हमेशा ही महंगे साबित हुए हैं। कई हाथों की जरूरत भी पड़ती है और फिर सीमेंट बनाने में पक्की ईंटें बनाने में पर्यावरण कितना प्रदूषित होता है। इस तथ्य को भी नजर अंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

सच्चाई तो यही है कि आज भी विश्व भर के आधे से ज्यादा आबादी मिट्टी के घरों में ही रहती है। भले ही मिट्टी के घर बनाने की निर्माण प्रक्रियाएं विभिन्न हो। अंदाजन भी देंखे तो पाएंगे कि 25 मिलियन परिवारों के पास रहने को घर नहीं है जबकि विश्व के विकासशील देशों में अर्धाधिक आबादी के पास मिट्टी के घर बनाने की सोचना हीं समझदारी नहीं कहलाएगी? जरूरत है सिर्फ सच्चाई जानने की और इस पर नये सिरे से सोचने की। भारत के ही संदर्भ में देखे तो लोग किसी चुम्बकीय आकर्षण से खिंचे चले जाते हैं। शहर की ओर। किसी अदृश्य बांसुरी की मंत्रमुग्ध कर देने वाली धुन ही मानों गांवों और कस्बों के लोगों को शहर की ओर जाने को सम्मोहित कर देती है। जबकि यहां आकर उनको झुग्गी-झोपड़ियों वाले सर्वथा असुविधाओं भरे अस्वास्थ्यकर वातावरण में रहना भी पड़ता है और वहीं काम भी करना पड़ता है। फिलहाल भारत में 290 मिलियन लोग शहरों और महानगरों में रहते हैं। 1991 में महानगरों की संख्या 23 थीं जो 2001 तक बढ़कर 40 हो गई है और 2025 तक तो यह भीड़ शहरी आबादी को खचाखच भर डालेगी। इनके अलावा कोई 580,760 गांवों में तकरीबन 629 मिलियन लोग रहते हैं। यानी औसतन हिसाब लगायें तो प्रति गांव 1,083 की आबादी। अब हरेक को एक अदद छत तो चाहिए ही। कम लागते वाले घर की ही तलाश ज्यादातर लोगों को रहती है। मोटे तौर पर देखा जाए तो 2021 तक शहरों में तकरीबन 77 मिलियन घरों और ग्रामीण इलाकों में 63 मिलियन घरों के निर्माण की आवश्यकता होगी। अब योजना आयोग के इन आंकड़ों के हिसाब से देखें तो क्या इतनी ज्यादा संख्या में सीमेंट पक्की ईंटों और इस्पता का उपयोग करके घर बनाना संभव है। इसलिए बेहतर यही है कि हम अपने मन-मस्तिष्क में यह सत्य बिठा लें कि मिट्टी का मोल और महत्व समझना ही बेहतर है। चाहे सुनने में यह बात पुराने फैशन जैसी ही क्यों न लगती हो। बात आसानी से हजम नहीं होती हो तब फिर इस तरह सोचें कि घर या इमारतें बनाने में यह जो लोहा, इस्पात, शीला, एल्युमिनियम, सीमेंट, संगमरमर, पक्की ईंटें वगैरह का इस्तेमाल किया जाता है। उन सबकी उपलब्धता के दौरान पर्यावरण में कितनी अधिक मात्रा में प्रदूषण फैलता है और इनके लिए कितनी ज्यादा ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है।

इसके अलावा जीवन के लिए सबसे पहली जरूरत समझे जाने वाले हवा और पानी में कितना जहर घुलता है। इनके विपरीत जिन भवन निर्माण सामग्रियों में अपेक्षाकृत कम ऊर्जा की खपत होती है वे पर्यावरण में भी कम ही प्रदूषण फैलाते हैं। मिट्टी एक ऐसी ही प्राकृतिक निर्माण सामग्री है। अब अगर मिट्टी की विशेषता जानना चाहे तो इसकी उपलब्धता से ही शुरूआत की जा सकती है। 250 वर्ग मीटर की जमीन पर 25 वर्गमीटर क्षेत्रफल वाला मकान तैयार करना है तो 60 क्युबिक मीटर मिट्टी की जरूरत पड़ेगी। इसके लिए बेंसमेंट एरिया छोड़कर 01266 मीटर (यानी साढ़े दस इंच) गहराई तक खोदकर निकाली गई मिट्टी पर्याप्त होगी। (दीवारें खड़ी करने के लिए)। सवाल यह उठ सकता है कि अगर इतने ही गुण है मिट्टी में तो फिर इससे मकान बनाना बंद क्यों हो गया? इस सवाल के जबाव में केरल की मशहूर हस्ती लॉरी बेकर का कहना है कि दरअसल जब से हमने अपना घर खुद बनाने के बजाए दूसरे लोगों पर इसकी जिम्मेदारी डाल दी तब से यह प्रथा गड़बड़ा गई। लॉरी बेकर कुशल मृतिका शिल्पी माने गए हैं। उनका यह भी कहना है कि भारत में हमारी मानसिकता ही ऐसी सनक का शिकार हो गई है कि मिट्टी यानी गरीब और गरीबी। सबसे पहले इस गलत धारणा को दूर करना चाहिए।

उनका मानना है कि एक मध्यम श्रेणी का ईंटों वाला साधारण सा घर बनाने के लिए मात्र दो या तीन बड़े पेड़ों को काटकर इसके जलावन से आवश्यक संख्या में ईंट पकाई जा सकती है। आस्ट्रेलिया जाकर देखें कि मिट्टी से ही कैसे-कैसे कलात्मक और फैशनेबल घर बनाये गए हैं। उन्हें देखकर एक बारगी यह पता करना भी मुश्किल होता है कि ये मिट्टी से बने घर होंगे। तो दिलोदिमाग से यह फितूर निकाल दें कि मिट्टी का घर कच्चा होता है या पुराने फैशन का होता है। मिट्टी सस्ती, सुलभ और टिकाऊं भवन निर्माण सामग्री है और आप इससे नए और आधुनिक शैली के मकान भी बना सकते हैं। जो अब भी मिट्टी का लोहा मानने की कसर बाकी रह गई हो तो एक नजर इन तथ्यों पर डाल लीजिए जो संभवतःआपका रहा-सहा शक भी दूर कर दें। दरअसल ये कुछ ऐसी मिसालें हैं जो मिट्टी की मजबूती साबित करती है। इग्लैंड के डेवॉन कंट्री में आज भी 40 हजार मिट्टी की बनी कुटियाएं मौजूद हैं और इनमें से कई कुटिया 500 साल पुरानी है। चूने से लिपी-पुती इन कुटियाओं पर फूस के छप्पर पड़े हुए हैं।

जेरिको में आपको धूप में सुखाई गई ईंटों से इमारतें देखने को मिलेगी। ये भी ईसा पूर्व आंठवीं सहस्राब्दी की बनी हुई इमारतें हैं। आग जलाकर ईंटों को सुखाने अथवा पक्की बनाने का चलन तीसरी सहस्राब्दी तक भी नहीं था, क्योंकि ईंधन जलाकर ईंट सुखाना खर्चीला समझा जाता था। मिट्टी की बनी विश्व की सबसे बड़ी मस्जिद माली में है जो 1907 में बनाई गई थी। चीन की दीवार का भी अधिकांश हिस्सा मिट्टी से बना हुआ है। उत्तर-पश्चिम न्यू मैक्सिको में 16 मील से बना चाको केन्यन-नॅशनल मॉन्युमेंट भी 500 एड़ी पुराना है और कच्ची ईंटों तथा पत्थरों का बना है। इनमें से अनासाजी इंडियन आदिवासी रहा करते थे और निर्माण कला की खासियत यह थी कि पूरे कबीले के रहने लायक संरचना तैयार की जाती थी वस्तुतः एक सतत् लंबाई में बना आवास रहता था। टीपू सुल्तान का बंगलौर स्थित किला अपना कलात्मक दीवारों, प्रवेश द्वारों और मेहराबों के लिए सुविख्यात है। यह मूलतः केम्पेमोड़ा में 1573 में बनाया गया था और पूरी तरह से मिट्टी से बने इस किले को बाद में टीपू सुल्तान ने पत्थरों से सुरक्षित करवाया था। हालांकि इस किले का बहुत सा हिस्सा ब्रिटिशों के द्वारा बर्बाद कर दिया गया है।

कोरोना से एक और शिक्षक की मौत

प्रखर पिंडरा वाराणसी। कोरोना के संक्रमण से शिक्षकों के मौत का सिलसिला जारी है। इसी क्रम फूलपुर थाना क्षेत्र के असीला (पिंडरा) निवासी व प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक विजय कुमार मौर्य 45 वर्ष की कोरोना के चलते सोमवार की सुबह मौत हो गई। बताते है कि तीन दिन पूर्व बुखार आया उसके बाद रविवार को सांस लेने में परेशानी होने पर परिजन उन्हें लेकर शहर के कई अस्पतालों में भागदौड़ लगाई और अधिकारियों तक गुहार लगाई लेकिन कोई अस्पताल भर्ती लेने को तैयार नही हुआ। जिसके कारण उनकी मौत हो गई। उक्त अध्यापक जौनपुर जिले के रामपुर ब्लॉक स्थित कथावतिया प्राथमिक विद्यालय में स0 अध्यापक थे। इनकी पत्नी अर्चना मौर्य जौनपुर के नेवादा गांव में प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका है। मृतक को एक लड़का व एक लड़की है। घटना के बाद परिजनो का रो रो कर बुरा हाल था। इनके पिता सियाराम मौर्य पिंडरा प्राथमिक विद्यालय के पूर्व प्रधानाध्यापक व समाजसेवी है।

जरूरत पर वेंटिलेटर न मिल पाने के कारण शिक्षक व राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के पदाधिकारी की मौत

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के दौरान कोरोना संक्रमण के शिकार हुए राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ नगरक्षेत्र वाराणसी के महामंत्री अनंत कुमार राय जो कि प्राथमिक विद्यालय जोल्हा नगरक्षेत्र में सहायक अधयापक भी थे अपनी जिंदगी का जंग होमी जहांगीर भाभा कैंसर संस्थान लहरतारा के कोविड सेंटर में हार गये। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के बाद ही वे बीमार थे और उनके शरीर में आक्सीजन का लेवल कम होने पर उन्हें बीते 22 अप्रैल को अस्पताल में एडमिट कराया गया था जिस दौरान उनकी अगले दिन तबीयत बिगड़ने लगी थी, उन्हें शीघ्र वेण्टिलेटर की आवश्यकता थी किंतु काफी प्रयास के बावजूद वेंटिलेटर न मिल सका। वेंटीलेटर के लिए लगातार प्रयास करते रहने पर अगले दिन दोपहर १ बजे वेण्टिलेटर मिल पाया परंतु वह वेण्टिलेटर पर भी एक घंटे ही जीवित रह पाए क्योंकि उन्हें वेण्टिलेटर की आवश्यकता एक दिन पूर्व थी। अपने नगरक्षेत्र के महामंत्री को भावभीनी श्रद्धांजलि देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ उत्तर प्रदेश जनपद वाराणसी के जिलाध्यक्ष शशांक कुमार पाण्डेय "शेखर" के नेतृत्व में पदाधिकारियों एवं सदस्य शिक्षकों की एक आनलाइन शोकसभा सायं को हुई जिसमें दो मिनट का मौन रखकर स्वर्गीय अनंत राय की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना किया गया। इस दौरान जिला उपाध्यक्ष ज्योति प्रकाश ने कहा अब समय आ चुका है जब हम सभी को मजबूती के साथ एक होकर खड़ा होना पड़ेगा क्योंकि हम लाख कोशिशों के बावजूद चिकित्सीय सुविधाएं न मिल पाने के कारण एक के बाद एक अपने साथियों को खोते चले जा रहे हैं। शोकसभा के दौरान सभी शिक्षकों से विचार विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि जिस ढंग से कोविड महामारी के प्रसार का असर शिक्षकों के ऊपर हो रहा है उससे उन्हें बचाने के लिए सरकारी सहायता का इंतजार किए बिना राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ शिक्षकों के मदद से खुद का एक कंटीजेंसी फंड बनाएगा जिससे कोरोना से प्रभावित शिक्षकों के इलाज और वेण्टिलेटर की जरूरत पूरी की जा सके तथा राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ किसी अस्पताल से अपने शिक्षकों के जीवन रक्षा के लिए टाई अप भी करेगा जिससे उसे अपने शिक्षकों की जीवन रक्षा के लिए अधिकारियों या सरकारी तंत्र का इंतजार न करना पड़े।

गिलोय (अमृता) के सेवन हेतु प्रबोधिनी फाऊण्डेशन ने गिलोय एकत्रिकरण एवं वितरण अभियान को दिया रफ्तार

गिलोय (अमृता) के सेवन विधि एवं गिलोय की निःशुल्क उपलब्धता हेतु प्रबोधिनी फाण्डेशन ने जारी किया हेल्प लाईन नम्बर +917007140262, 9889730000

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। वाराणसी मे कोरोना महामारी के प्रकोप से बचाव एवं निरोग रहने मे रामबाण औषधि गिलोय (अमृता) की उपयोगिता सेवन एवं संरक्षण हेतु अपने अभियान को गति देते हुये राजातलाब जक्खिनी के विभिन्न गांवो से गिलोय एकत्र कर उसके सेवन एवं उसकी उपयोगिता हेतु महत्व बताते हुये जागरूक किया। प्रबोधिनी फाउण्डेशन के महासचिव विनय शंकर राय " मुन्ना " के नेतृत्व मे गिलोय वितरण एवं एकत्रीकरण अभियान मे उदय प्रताप महाविद्यालय के वरिष्ठ छात्र नेता समीर सिह"विशाल", राहुल सिह , मंगेश राय एवं अभय मिश्रा प्रमूख रूप से शामिल थे। विनय शंकर राय ने कहा कि गिलोय के सेवन से व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता बहुत मजबूत हो जाती है

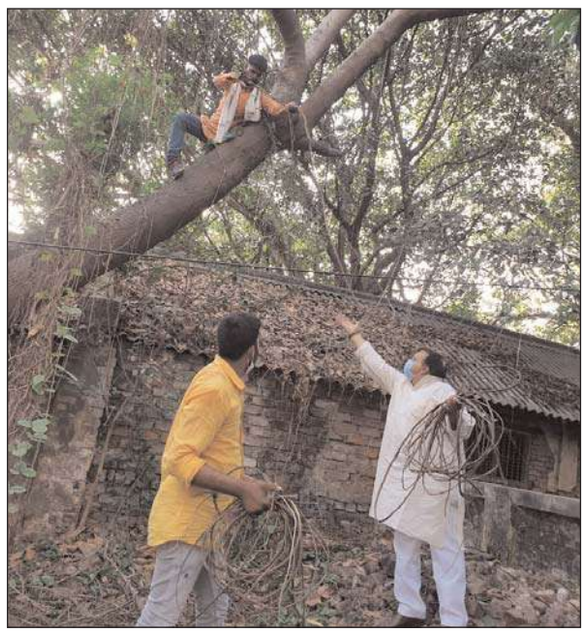

क्योकि गिलोय औषधी वात ,पित्त एवं कफ तीनो रोगो से रक्षा करती है , गिलोय जिसको आयुर्वेद मे अमृता कहा गया है, गिलोय ही एक ऐसी औषधी है जिसमे वात,पित्त एवं कफ तीनो रोगो को ठीक रखने की क्षमता है, इसके सेवन करने से व्यक्ति निरोग रह सकता है , इसलिये स्वस्थ भारत- स्वस्थ समाज की परिकल्पना को चरितार्थ करने हेतु गिलोय का सेवन रामबाण है। संस्था के प्नबन्ध समिति ने सर्व सम्मत से निर्णय लिया है आम जनमानस को गिलोय(अमृता) की निःशूल्क उपलब्धता एवं जागरूकता हेतु संस्था ने लिया है जिसका कुशल संचालन स्वथः विनय शंकर राय "मून्ना", डा. संजय सिह गौतम , समीर सिह "विशाल' , राहुल सिह, अभय मिश्र कर रहे है।

प्रदेश सरकार की हठधर्मिता ने शिक्षकों को मौत के मुंह में ढकेलने का काम किया- रमेश सिंह

प्रखर जौनपुर। प्रदेश सरकार की संवेदनहीनता और किसी भी कीमत पर पंचायत चुनाव कराने की हठधर्मिता ने न केवल प्रदेश में कोरोना संक्रमण को अति गम्भीर बना दिया है बल्कि चुनाव कार्य में लगे सैकड़ों शिक्षकों/कर्मचारियों को मौत के मुँह में भी ढकेल दिया है। इतना ही हजारों साथी संक्रमित होकर जीवन एवं मृत्यु से संघर्ष कर रहे हैं। निश्चित रूप से सरकार को इसकी कीमत आगे आने वाले दिनों में चुकानी ही होगी।उक्त बातें कहते हुए उ0प्र 0 मा0शि0 संघ के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष रमेश सिंह अवगत कराया कि आज उन्होंने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर कोरोना संक्रमण की स्थिति सामान्य होने तक मतगणना रोके जाने के लिए आवश्यक कदम उठाने और आवश्यकता पड़ने पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय की भी शरण लेने की भी मांग की है।उन्होंने बताया कि प्रदेश का मुखिया होने के कारण अपने कर्मचारियों और आम-जन के जान माल की रक्षा करना उनका परम कर्तव्य है। साथ ही संगठन अर्थात उ0प्र 0मा0शि0संघ की भी यह जिम्मेदारी है कि वह अपने सदस्यों के हितों के लिए हर सम्भव संघर्ष करे।ऐसी स्थिति में प्रधानमंत्री के इस नारे को चरितार्थ करते हुए कि जान है तो जहान है,संगठन मतगणना स्थगित न किए जाने की स्थिति में मतगणना का बहिष्कार करने के लिए कटिबद्ध हैं। क्योंकि मतगणना हेतु कर्मचारियों को दिए जाने वाले प्रशिक्षण और मतगणना के दौरान उन कर्मचारियों की भी ड्यूटी लगी हुई है जो या तो खुद संक्रमित हैं अथवा उस पोलिंग पार्टी के सदस्य रहे हैं जिसका कोई सदस्य संक्रमित हुआ है या मर गया है।ऐसी स्थिति में सभी के एकत्र होने से संक्रमण की भयावहता का अनुमान सहज लगाया जा सकता है।चुनाव के दौरान सरकारी अव्यवस्था और उससे होने वाली मौतों ने संगठन को झकझोर दिया और अब अपने सदस्यो को मौत के मुँह में जाने से रोकने के लिए निर्णायक संघर्ष करेगा।यदि सरकार मतगणना स्थगित करने की दिशा में कोई सार्थक कदम नहीं उठाती है तो संगठन के पास मतगणना वहिष्कार के अलावा और कोई विकल्प शेष नहीं है ,जिसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सरकार पर होगा।

दी सेंट्रल बार एसोसिएशन बनारस के पदाधिकारियो की वर्चुअल बैठक सम्पन्न

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। दी सेंट्रल बार एसोसिएशन बनारस वाराणसी के पदाधिकारियो की वर्चुअल बैठक आहुत हुई। बैठक मे कन्हैया पटेल महामंत्री , सुजीत पाण्डेय, प्रेमचंद्र मिश्रा,राजा आनंद ज्योति सिंह (उपाध्यक्ष गण)विनय सिंह पिन्टू संयुक्त सचिव प्रशासन,विशाल मौर्या, व बार के समस्त पदाधिकारियों ने भाग लिया। जिसमें अप्रैल माह कोविड-19 के लगभग 25 अधिवक्ताओं की मौत व तकरीबन 70 परिजन की मृत्यु पर चर्चा हुई और लगभग 50 अधिवक्ता व उनके परिवार के लोग कोरोना के चलते अपनी जिन्दगी की लड़ाई लड़ रहे है। बनारस जिले का स्वास्थ विभाग व सीएमओ का रवैया अधिवक्ताओं के प्रति ठीक नही रहा, कुछ अधिवक्ताओं की जिन्दगी बचायी जा सकती थी। लेकिन सीएमओ से उपेक्षा पूर्ण रवैये से उन्हें बचाया नही जा सका. यहीं नही सीएमओ को जब बार के पदाधिकारी मोबाइल पर फोन किये तो सीएमओ द्वारा फोन कॉल तक नही उठाया जा रहा और न ही उनकी तरफ से कोई मदद मिली,इन्हीं सभी बातो के लेकर अधिवक्ता समाज दि.26-4-21को दिन मे11:30 बजे निम्न मांगो को लेकर शान्ति पूर्वक ढंग से सीएमओ वाराणसी का जिला मुख्यालय पर पुतला जलाएगा। 1-अधिवक्ता समाज की समुचित इलाज हेतु एक अस्थायी कोविड-19का अस्पताल सेंट्रल बार एसोसिएशन के ऊपरी सभागार मे सरकार की तरफ से बनवाई जाये जिसमें आवश्यक दवा डाक्टर नर्स आक्सीजन सिलेंडर की व्यवस्था हो जिससे पीडित अधिवक्ता समाज का समुचित ईलाज हो सके। 2.जिन भी अधिवक्ता का कोविड-19 के कारण मृत्यु हुई उनके परिवार को 5 लाख रुपये की आर्थिक मदद सरकार द्वारा तत्काल दिया जावे। 3.वाराणसी के सीएमओ का अधिवक्ताओं के प्रति रवैया सही नहीं रहा और नहीं बार के पदाधिकारियो से मोबाइल पर बात करते है सीएमओ की बेरुखी के चलते कई अधिवक्ताओं की जान चलीं गयीं।इसलिए अधिवक्ता समाज यह मांग करता है कि सीएमओ को तत्काल बर्खास्त किया जाय। 4.यह कि अधिवक्ताओं के समुचित इलाज के लिए एक एम्बुलेंस उपलब्ध कराया जाय जो बराबर जिलाधिकारी पोर्टिको मे खड़ी रहे। 5-जिला प्रशासन के कोविड-19 के प्रमुख अधिकारियों के पास बार के पदाधिकारियों का नम्बर सेभ हो जिससे किसी अप्रिय घंटना को रोकने में मदद मिल सके।

जिलाध्यक्ष हंसराज विश्वकर्मा ने कोरोना महामारी में वाराणसी की जनता को सहायता हेतु किया हेल्प लाइन नम्बर जारी

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। भाजपा प्रदेश सह प्रभारी सुनील ओझा एवं क्षेत्र अध्यक्ष महेश चन्द श्रीवास्तव के दिशा निर्देश पर जिलाध्यक्ष हंसराज विश्वकर्मा ने कोरोना महामारी में वाराणसी जिले के लोगों के लिए सहायता उपलब्ध कराने के लिए हेल्प लाइन नम्बर जारी किया है। जिला मीडिया प्रभारी श्रीनिकेतन मिश्र ने बताया कि कोरोना रोगियों को हर सम्भव सहायता उपलब्ध हो इसे दृष्टिगत रखते हुए जिलाध्यक्ष हंसराज विश्वकर्मा ने यह पहल की है।हेल्प लाइन नम्बर पर लोगों को आक्सीजन,बेड आदि के लिए जिला प्रशासन से सामन्जस्य स्थापित कर रोगी एवं उनके परिजनों को सहायता उपलब्ध करायी जायेगा।इस क्रम में जिला महामंत्री प्रवीण सिंह गौतम को जिला प्रभारी का दायित्व दिया गया है जिनका मोबाइल नम्बर 9838160133, 884008390 है उनके साथ हर विधानसभा क्षेत्र में क्रमशः- रोहनिया विधानसभा - विनोद सिंह पटेल 9415373077 , प्रभात सिंह 9454976789, सेवापुरी विधानसभा- अरविंद सिंह पटेल 9415616670 , पिंडरा विधानसभा -डॉ जय प्रकाश दुबे 9454820838, अजगरा विधानसभा-संजय सोनकर 9838970016, शिवपुर विधानसभा-संजय सिंह 9453002334, इसके साथ ही होम आइसोलेशन के रोगियों एवं अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धी जरुरतो के लिए चिकित्सा सम्बन्धित सहायता हेतु -डॉ राजेश गुप्ता 9450251729 एवं डॉ धर्मेन्द्र कुमार कश्यप 9918922150 से उपरोक्त नम्बरों पर सम्पर्क कर परामर्श लिया जा सकता है। जिलाध्यक्ष हंसराज विश्वकर्मा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पीएम केयर फण्ड से पुरे देश में 551 आक्सीजन प्लाण्ट स्थापित करने की पहल करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

पुलिस अधीक्षक द्वारा आमजनमानस को कोविड 19 प्रोटोकाल का पालन करने हेतु किया गया प्रेरित

प्रखर संतकबीरनगर। बढ़ते कोविड-19 संक्रमण के दृष्टिगत आज दिनांक 26.04.2021 को पुलिस अधीक्षक संतकबीरनगर डॉ कौस्तुभ द्वारा से शासन के निर्देश के क्रम में शहर विभिन्न बैंकों व मेहदावल बाईपास से बरदहिया चौकी तक आमजनमानस को कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करने हेतु प्रेरित किया गया तथा बिना मास्क लगाये घूम रहे व्यक्तियों का नियमों के अन्तर्गत चालान किया गया व जरुरतमंदों को मास्क भी वितरित किये गये । संतकबीरनगर पुलिस द्वारा वैश्विक महामारी कोविड-19 से बचाव हेतु लोगों को पीए सिस्टम में माध्यम से, पुलिस द्वारा वाहन से गश्त कर, व पैदल गश्त कर लोगों को बिना मास्क घर से बाहर ना निकलने, सैनेटाइजर का उपयोग करने, सामाजिक दूरी का पालन करने की अपील की जा रही है ।

भय नहीं जागरूकता फैलाएं - राजू रंजन यादव

प्रखर संतकबीरनगर । आज हर तरफ कोरोना को लेकर भय का माहौल बना हुआ है, जानकारी के अभाव में बुजुर्ग से लेकर महिला बच्चे व जवान तक डरे सहमे व भय में जी रहे हैं। फेसबुक एवं अन्य सोशल मीडिया पर भी कहीं लाशों की फोटो तो कही ऑक्सिजन के अभाव में मरते लोगों का चित्र वायरल किया जा रहा है। अगर आप हम इस महामारी में एक दूसरे का साथ नही दे सकते तो डर का माहौल बनाना भी गलत है। कालाबाजारी करने वाले लोग भी आपदा में अवसर खोजते हैं और यही लोग जब स्वयं समस्या में घिरते हैं तो दूसरों से मदद मांगते फिरते हैं। रेमडीसीवीर इंजेक्शन ब्लैक मार्केटिंग कर 10-20 हजार में बेचा जा रहा है, ऑक्सीजन सिलिंडर भी 20-20 हजार में रिफिलिंग किया जा रहा है। सांस लेने में समस्या है तो उल्टे लेट जाएं कुछ देर आपको राहत मिलेगी, दिन में कई बार भांप लीजिए और आपको अगर ऑक्सिजन की जरूरत है तो पेशेंट का कोविड रिपोर्ट, डॉक्टर का प्रेस्क्रिप्शन और एक आधार के साथ खाली सिलिंडर मगहर मयूर

गैसेस प्राइवेट लिमिटेड या सेक्टर-13 गोरखपुर मोदी ऑक्सिजन प्लांट जाकर 350? मात्र देकर रिफिलिंग करवा लीजिए। रेमडीसीवीर इंजेक्शन गोरखपुर सदर के पीछे आपदा प्रबंधन केंद्र पर पेशेंट का कोविड रिपोर्ट, आधार और डॉक्टर का प्रेस्क्रिप्शन लेकर जाए उपलब्ध हो जाएगा। आज जरूरत है हर किसी के मदद में खड़ा होने के लिए चाहे दवा हो या खाद्यान्न, क्योंकि कोरोना काल मे हर कोई परेशान है। ज्यादा से ज्यादा जागरूकता फैलाएं समस्या का समाधान उपलब्ध करवाए और कही से भी भय या डर का माहौल ना बनायें। बहुत जरूरी होने पर ही घर से बाहर निकले और मास्क या गमछे से मुंह ढककर रखें, सैनिटाइजर का उपयोग करे, संक्रमित व्यक्ति से दूर रहे, धूप का भी सेवन करे यह सबसे अच्छा सैनिटाइजर है।

संत कबीर सेवा समिति इस विकट घड़ी में पूरे जनपद के साथ है।

"जो बदला जा सके, उसे बदलिये,

जो बदला ना जा सके, उसे स्वीकारिये,

जो स्वीकारा न जा सके, उससे दूर हो जाइये,

लेकिन खुद को खुश रखिये...

क्योंकि वह भी एक बड़ी जिम्मेदारी है!"

डबल इंजन की सरकार फेल, बनारस की जनता देख रही मौत का तांडव : विष्णु शर्मा

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। समाजवादी पार्टी के महानगर अध्यक्ष ने योगी और मोदी सरकार के नीतियों को गलत ठहराते हुए कहा कि ये डबल इंजन की सरकार विफल है। रोजाना भा:जपा सरकार अफवाह फैला रही है कि वाराणसी मे आक्सीजन की कमी नहीं है सडकों की तस्वीर झूठ नही बोलती। समाजवादी पार्टी के महानगर अध्यक्ष विष्णु शर्मा ने कहा कि एक वर्ष पूर्ण जब कोरोना महामारी का देश मे प्रकोप आया तब केंद्र सरकार ने फैसला लेने में बहुत देर की जिसका खामियाजा जनता ने अपनी जान गंवा के दिया।

कोरोना की आहट दिसम्बर 2019 में ही सुनाई दी थी और सरकार मार्च में लाकडाउन का निर्देश देती है जिससे आम जनता महामारी से कम भुखमरी से ज्यादा मरी। इस वर्ष कोरोना महामारी के खतरनाक स्ट्रेन को आते ही लोग आक्सीजन से लेकर के वेंटिलेटर और वैक्सिन के लिए तड़पने लगे, बेड की मारामारी है और ये सब सरकार की विफलता को दशार्ती है। अगर आप कोरोनो महामारी पर गम्भीर होते तो देश में इसपर लगाम लगाने में सफल होते, आपने एक बार 3 महीने का लाकडाउन लगाया और आपको लगा कि आपने सब कंट्रोल में कर लिया, साथ मे ताली और थाली बजवा के कोरोना को मात दे दिया। स्मरण दिलाना है कि वाराणसी के सांसद और देश के प्रधानमंत्री जी ने पी०एम० केयर फण्ड में जनता से पैसे मांगे थे और लोगों ने दिया भी, आज समय है कि जनता को उसका हिसाब दिया जाए, बताये डबल इंजन की सरकार की एक वर्ष में कितने हॉस्पिटल, या कितने हॉस्पिटल में आपने आई०सी०यू० की संख्या, बेड की संख्या को बढ़ाया ?? आपदा प्रबंधन कोष की राशि से जनता के लिए क्या चिकित्सीय व्यवस्थायें की गई? श्री शर्मा ने कहा कि अगर सरकारें गंभीर होती तो आज उसका परिणाम ये नही होता, आज जनता को दर बदर भटकना नही होता, अपनी और अपनों की जान नही गवानी पड़ती। आज हमारे यहाँ सिर्फ आक्सीजन सिलेंडर और बेड की ही कमियां नही है, साथ ही डॉक्टर व नर्सिंग स्टाफ की भी कमियाँ एक बहुत बड़ा कारण है जनता की मौत का, सरकार जवाब दे कि कितनी भर्तियाँ की गई आपके शासनकाल में? अगर आप जनता की सोचते तो भर्तियाँ निकालतें, इससे लोगों की आर्थिक स्तिथि भी सुधरती जान भी बचती, और हमारे लिए आज देश के भीतर जनता की जान को बचाने के लिए लड़ने वाले डॉक्टर और नर्स की भी जाने बचती।आज भी सरकार की प्राथमिकता केवल सरकार बनाना है, अभी कोई चुनाव आ जाये तो ,या अपने यहाँ प्रवासी भारतीय सम्मलेन करना हो तो कितनी तत्परता से कार्य होता है, करोड़ो खर्च करके तुरंत सब तैयारी हो जाती है मगर अस्थाई अस्पताल बनाने तक न जाने कितने लोग मौत के मुंह मे काल कवलित हो जाएगे। आज दूसरे स्ट्रेन की भयावता महामारी के दौरान सरकार सभी तंत्र फेल है व असहाय है। सरकार अपनी गलत नीतियों को जनता के ऊपर थोप रही है जिसका खामियाजा जनता को अपनी जान गंवा के भुगतना पड़ रहा है। हमारी मांग है सरकार से की सबको, अर्थात प्रत्येक नागरिक को उचित व्यस्था दे सरकार , और जिनकी मौत इस महामारी में हुई है।

जिलाध्यक्ष के पिता व समाजसेवी का निधन

प्रखर पिंडरा वाराणसी। सिंधोरा थाना क्षेत्र के करेमुवा निवासी व समाजसेवी 90 वर्षीय कर्मवीर चौहान की सीने में संक्रमण के कारण रविवार की रात में मौत हो गई। मृतक सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष गणेश चौहान के पिता थे। उनके मौत की सूचना पर दर्जनों की संख्या में जनप्रतिनिधि उनके आवास पर पहुचकर शोक संवेदना व्यक्त की।

वाराणसी व्यापार मण्डल ने बैठक में किया मांग लगे वाराणसी में एक हफ्ते का लाकडाउन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। वाराणसी व्यापार मंडल की एक अति आवश्यक वर्चुअल बैठक अपरान्ह 2:00 बजे आरंभ हुई। जिसमें उपस्थित व्यापारियों ने वाराणसी में बढ़ते हुए करोना मरीजों की स्थिति को देख और सुन कर मन में डर व दुख व्याप्त गया है प्रत्येक व्यक्ति के मन से एक ही चित्कार निकल रही है कि बस बहुत हो चुका अब वाराणसी में 1 सप्ताह का लॉक डाउन लगाया जाना नितांत आवश्यक है संस्था के अध्यक्ष अजीत सिंह बग्गा व महामंत्री प्रमोद अग्रहरी ने कहा कि यह दौर अनिश्चितता का है, सरकार के द्वारा जी तोड़ प्रयास करने के बावजूद कुछ अस्पताल कर्मी व दवा के कारोबार करने वाले लोग आदत से बाज नहीं आ रहे हैं वह लोग जीवन रक्षक दवाओं इंजेक्शन व ऑक्सीजन इत्यादि को निर्धारित मूल्य से ज्यादा कीमत पर कालाबाजारी करके व्यापारियों की बेज्जती करवा रहे हैं। अस्पताल मालिकों द्वारा भारी मात्रा में धनराशि डिपॉजिट करने के बाद ही इलाज कर रहे हैं। जिससे कमजोर व मध्यम वर्ग के लोग दम तोड़ दे रहे हैं ,शासन प्रशासन के लाख डराने धमकाने का इन पर कोई असर नहीं हो पा रहा है। महामारी के कारण कई मंत्री विधायक सांसदों ने भी दम तोड़ दिया आज अकेले वाराणसी के श्मशान घाटों पर लगभग सैकड़ों कोविड-19 संक्रमण से मृत लोगों का शवदाह हो रहा है। केवल शवदाह का रेट निर्धारित कर सरकार पीठ थपथपा रही है। व्यापारियों ने शासन प्रशासन से अभिलंब जीवन रक्षक दवाओं की कालाबाजारी कर रहे गैंग को पकड़ने व अस्पतालों के बाहर इलाज का मूल्य निर्धारण का बोर्ड लगवाने की मांग वाराणसी व्यापार मंडल करता है, और व्यापारियों से अपील करता है कि दिनांक 29/04/2021 से लेकर 1 सप्ताह तक अपने अपने व्यवसाय प्रतिष्ठानों को बंद करने का निर्णय लें ,ताकि आपका व आपके परिवार का जीवन बचाया जा सके। यदि हम जीवित रहेंगे तो कभी भी कमा लेंगे लेकिन जब हमारे लोग ही नहीं रहेंगे तो हम व्यापार कैसे कर पाएंगे ।

संक्षिप्त खबरें

गरीबों के मसीहा रहे वशिष्ठ महाराज का निधन

प्रखर शाहगंज जौनपुर। सरपतहां क्षेत्र के रूधौली गांव निवासी 78 वर्षीय बशिष्ठ महराज का सोमवार की भोर में निधन से पूरे इलाका शोकाकुल है। उनका अंतिम संस्कार क्षेत्र के इमलिया घाट पर किया गया। शव को मुखाग्नि उनके पुत्र पप्पू तिवारी उर्फ छोटे गुरू ने दी। बीते 2 दिनों से उन्हें सांस लेने में दिक्कत हो रही थी । बाबा के भक्तों ने उपचार के लिए निजी डॉक्टर की मदद ली । डॉक्टर ने हरसंभव उन्हें बचाने का प्रयास किया, लेकिन समय पर ऑक्सीजन न मिलने से आखिरकार उनकी जान चली गई। इलाके के प्रबुद्ध नागरिक वशिष्ठ महाराज उर्फ तिवारी गुरु के नाम से प्रसिद्ध वशिष्ठ महाराज दो गवर्नमेंट नौकरियों में थे । दोनों ही नौकरियों से उन्होंने त्यागपत्र देकर समाज सेवा का कार्य शुरू किया। उनकी लगन शीलता और जरूरतमंद लोगों की मदद करने के प्रति अटूट श्रद्धा को देखते ही थोड़े ही दिनों में वह काफी लोकप्रिय हो गए। रोज की तरह वह अपनी बुलेट मोटरसाइकिल से क्षेत्र के अर्सिया, रुधौली बाजार में आए। अपने भक्तों से मुलाकात की, इस दौरान वापसी में उन्होंने लोगों के जरूरत के लिए कपड़ा, फल, सब्जी व अन्य अनाज भी ईकट्ठा किया । जिसे लेकर वह अपने छोटे से कुटिया में पहुंचे ही थे कि उनकी तबीयत खराब हुई, और उनका निधन हो गया। वशिष्ठ महाराज के निधन की खबर पर पं0 सुशील तिवारी महराज के रूधौली स्थित आवास पर सोमवार को कोरोना कोविंद का पालन करते हुए शोकसभा की गई। जिसमें मौजूद लोगो ने दो मिनट का मौन रखकर मृतक आत्मा की शांति के लिऐ ईश्वर से प्रार्थना की। इस दौरान प्रवधक सुरेश पाडेय, वरिष्ठ भाजपा नेता बेचन सिह, खुशीराम मिश्र काका , शिक्षक नेता सतीश सिंह ,सुधाकर सिंह, विकास विन्द, मेहीलाल जायसवाल ,ललित दीक्षित ,अशोक गौड ,रानू सिंह ,विनय तिवारी मोहम्मद अहमद ऊर्फ पप्पू सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक मुश्ताक अहमद के निधन पर क्षेत्र में शोक व्याप्त

प्रखर सेमरियावाँ संतकबीरनगर। क्षेत्र के सम्मानित व प्रतिष्ठित शिक्षक पूर्व माध्यमिक विद्यालय चिऊटना के इ प्रधानाध्यापक रहे मुश्ताक अहमद साहब निवासी ग्राम (पचदेऊरा)रविवार को सायं सात बजे इंतकाल हो गया ।इनकी उम्र 62 साल थी।25 दिन पूर्व बेसिक शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त हुए थे।दो दिन पूर्व तबीयत खराब हुई थी। इनके आकस्मिक निधन पर क्षेत्र में शोक व्याप्त है।इनकी नमाजे जनाजा गांव में रात ग्यारह बजे अदा की गई।बहुत से गणमान्य लोग मौजूद रहे। प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला उपाध्यक्ष जफीर अली करखी ने श्री मुश्ताक अहमद बहुत ही मिलनसार , नेक व्यक्तित्व के थे।इनके आकस्मिक निधन पर क्षेत्रीय जनों ने गहरा दुख व्यक्त करते ईश्वर से दुआए मगफीरत की।साथ ही घर व परिवार वालों को अल्लाह सब्र अता फरमाए। सपा जिला अध्यक्ष गौहर अली खान,सपा जिला उपाध्यक्ष मो अहमद, महमूद चौधरी,फिरोज अहमद ,शोएब अहमद नदवी,वकील अहमद अंसारी,फुजैल अहमद नदवी,लल्लन चौधरी , डा नसीम अहमद,ऐनुल्लाह खान, सलामुल्लाह सिद्दीकी, प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष मो आजम,शोएब अख्तर,विनोद यादव,अजीत सिंह, कमाल अहमद,अब्दुल अजीम,सुहेल अहमद,फूल चंद,मनोज कुमार अनिल,शैलेंद्र वरूण, मसरूरखान,सुरजन गोंड,खुरशीद अहमद,सुशील शर्मा,सतीश तिवारी,परमात्मा पाठक, जूनियर शिक्षक संघ के महामंत्री अब्दुर्रहीम,अब्दुसलाम सिद्दीकी,,जलालुद्दीन,इसरारुल हक,शमीम अहमद,मुबारक हुसैन,इम्तियाज अहमद,अब्दुर्रहमान,मुजीबुल्लाह प्रिंसिपल ,फैजान अहमद, मो अदनान,शबीर अहमद ने श्री मुश्ताक अहमद साहब के आकस्मिक निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया।

दो दिन के लॉकडाउन का तप्पा उजियार में रहा बड़ा असर

प्रखर सेमरियावां संतकबीरनगर। दो दिन के लॉकडाउन का पूरे जनपद तथा तप्पा उजियार के थाना दुधारा क्षेत्र में बहुत असर रहा।शनिवार रविवार पूर्ण तालाबंदी शत प्रतिशत सफल रही। सोमवार के दिन प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला उपाध्यक्ष जफीर अली करखी,उजियार विकास मंच के संरक्षक मो अहमद,अध्यक्ष अनवार

आलम चौधरी ,महामंत्री मुजीबुर्रहमान कासमी ने कहा की तप्पा उजियार की सम्मानित जनता ने दो दिन के लॉकडाउन में जिला प्रशासन व पुलिस परशासन का पूरा साथ व सहयोग किया। जो यह साबित करता है की यहां की जनता कोरोना महामारी के प्रति सचेत व सतर्क हैं। मोहममद अहमद, व जफीर अली, अनवार आलम चौधरी और मुजीबुर्रहमान कासमी ने क्षेत्रीय जनों से अपील किया है की माहे रमजान जैसे पवित्र महीने में कोविड 19 की रोकथाम हेतु इसी तरह अन्य पांच दिनों में भी कोरोना के खात्मे के लिए सचेत और सतर्क रहें। अनावश्यक भीड़ का हिस्सा न बने ,इससे बचें,मास्क अवश्य लगाएं,सोशल डिस्टेंस का पालन करें, सफाई का ख्याल रखें,बार बार साबुन से हाथ धूलें,घर में रहें,सुरक्षित रहें।इस महामारी वबा के खात्मे के लिए ईश्वर से रोज प्रार्थना करें। ईश्वर सबको स्वस्थ्य रखें।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट https://prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं